~|| अंतरा-शब्दशक्ति ||~

मासिक वेब पत्रिका

अंक 4 अक्टूबर 2017 दीपावली विशेषांक

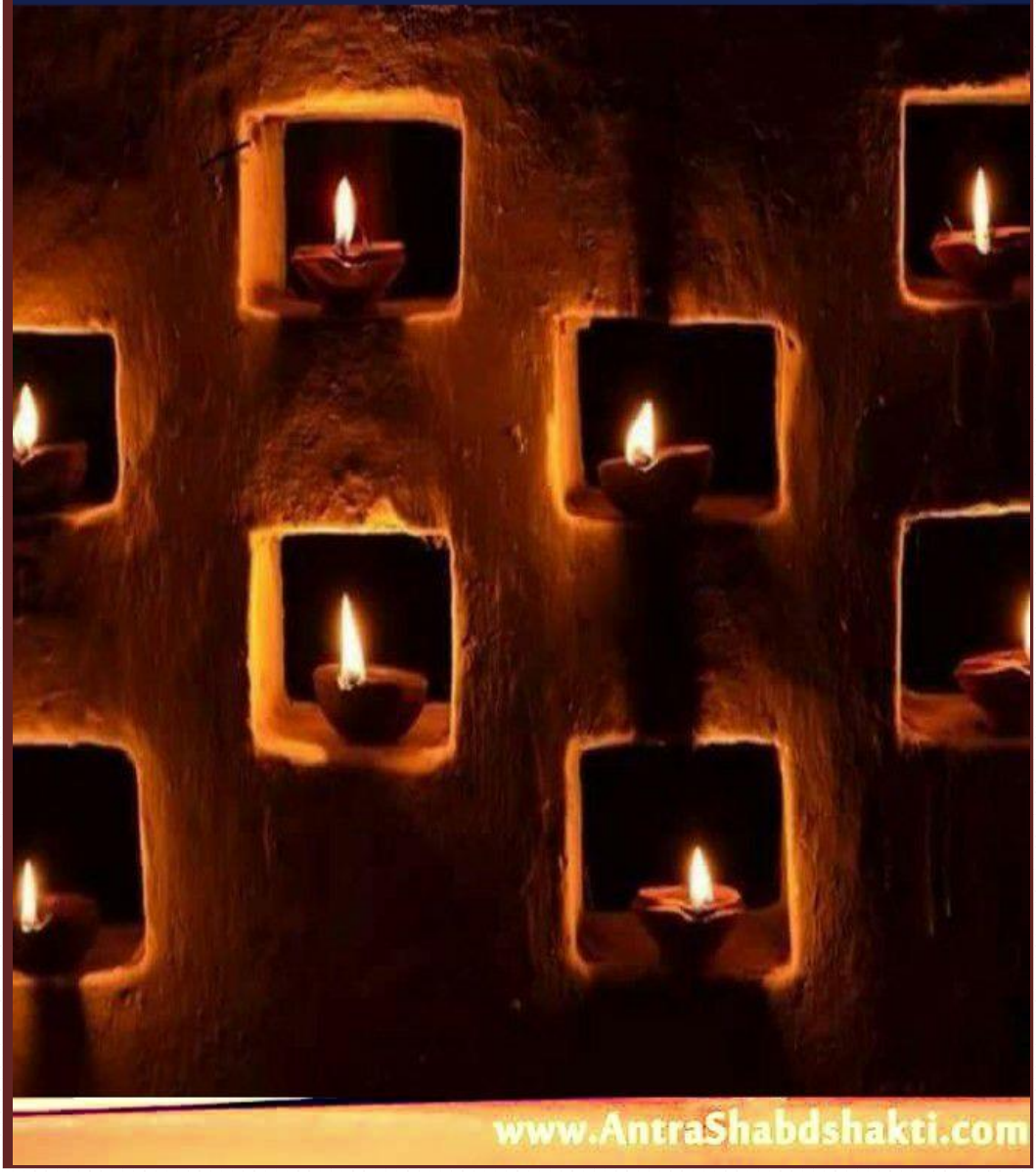

www.AntraShabdshakti.com

~।।अंतरा-शब्दशक्ति।।~

संरक्षक एवं मार्गदर्शक

मनोज जैन

संस्थापक एवं संपादक

प्रीति समकित सुराना

सहयोगी एवं परामर्श दाता

ब्रजेश शर्मा 'विफल'

वेबसाइट

www.antrashabdshakti.com

ईमेल

antrashabdshakti@gmail.com

फेसबुक पेज

https://www.facebook.com/www.antrashabdshakti/

फेसबुक समूह

https://www.facebook.com/groups/989086901140447/

अनुक्रमणिका

संपादकीय

प्रीति समकित सुराना 5

पाठकीय समीक्षा

कान्ता रॉय 8

गीत-नवगीत

मनोज जैन 11

कल्पना मनोरमा 12

जगदीश पंकज 13

बृजनाथ श्रीवास्तव 14

ब्रजेश शर्मा 'विफल' 15

शब्द मसीहा 16

दोहे

संजीव 'सलिल' 17

राजेन्द्र'अनेकांत' 18

कविता

संजय वर्मा 'दृष्टी ' 19

जयति जैन 'शानू' 20

अर्विना गहलोत 21

जितेश गौतम 22

निरुपमा सिन्हा 23

शिरीन भावसार 24

संजय कुमार 'संज' 25

सुरेखा 'स्वरा' 26

अदिति रूसिया 27

मुकेश कुमार ऋषि वर्मा 28

मुक्तक

रजनी कोठारी "भारतीय" 29

विनोद तिवारी 'मानस' 30

हाइकु

कैलाश बिहारी सिंघल 31

डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई 32

ग़ज़ल

सुरेन्द्र श्लेष 33

उर्मिला माधव 34

कृष्ण बक्षी 35

अनीता सिंह 36

बाल कविता

कुमार गौरव अजीतेन्द्र 37

राजेन्द्र श्रीवास्तव 38

कहानी

मुकेश दुबे 39-42

गोकुल सोनी 43-45

पिंकी परुथी "अनामिका" 46-47

लघुकथा

कविता वर्मा 48

प्रदीप अरोरा 49

संजीव आहूजा 50

सीमा शिवहरे 51

अनुवाद

विनोद जैन 52-53

आलेख

आशुतोष राणा **54-56**

पुस्तक समीक्षा

समंदर प्राण अकुलाया : रविन्द्र भट्ट हिन्दी अनुवाद: डॉ. प्रतिभा गुर्जर

पुस्तक समीक्षा: कान्ता रॉय **57-60**

डॉ. प्रतिभा सिंह परसार राठौड़ की रचनाओं पर केन्द्रित पत्रिका - शब्दध्वज

पुस्तक समीक्षा: देवेन्द्र सोनी, इटारसी **61-63**

साक्षात्कार

रीना पारीक (लेखिका)

प्रस्तुतकर्ता : वसुन्धरा राय **64-69**

यात्रा संस्मरण

कीर्ति वर्मा **70-**

संपादकीय

अति सर्वत्र वर्जयेत

आज यूं ही बैठे बैठे एक विचार आया कि

अकसर हमारे आसपास धर्म और भ्रष्टाचार की बातें हम सुनते और करते ही रहते हैं पर क्या ये सही है?

माना की धर्म जीवन को सुनियोजित करता है,..एक व्यवस्थित मार्गदर्शन देता है,..पर समस्या ये है कि भांति-भांति के धर्म और धार्मिक परम्पराओं ने इंसानियत को इतना जकड़ा हुआ है की इंसानियत भूलकर सिर्फ धर्म ही याद रहता है,.. "हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई,आपस में सब भाई-भाई" जैसी बातें अब सिर्फ बातें हैं,..हर धर्म का व्यक्ति अपने आपमें सबसे अधिक आदर्शवादिता का अभिमान लिए होता है,..और इसी अभिमान को पुष्ट करने के चक्कर में खुद पर लबादा डाले समाज में रहता है,.पर इन सब प्रक्रियाओं में खुद को बेहतर साबित करने की जद्दोजहद में मानवधर्म कब पीछे रह जाता है पता ही नहीं चलता,... यहां शुरू होती है धर्मान्धता की अति,..

भारतीय परंपरा के अनुसार जिस घर में बच्चा जन्म लेता है "अधिकतर" उसे धर्म से जुड़ा कोई मन्त्र या वाक्य उसके कान में सुनाया जाता है,.. यानि जन्म लेते ही बच्चे को बता दिया जाता है की वो किस धर्म का है,..उसके पास कोई विकल्प नहीं होता कि वो अपनी रूचि का धर्म चुने,...समझ आने के पहले ही जन्मघुट्टी में इंसानियत की जगह धार्मिक संस्कार पिलाए जाते हैं,...माना की ये बिलकुल गलत नहीं है पर क्या ये ज्यादा सहीं नहीं होगा की संस्कारों को इंसानियत की शिक्षा सबसे पहले दी जाए,...??? इसके बाद बात भ्रष्टाचार की,...बच्चे को बचपन से ही भ्रष्टाचार सिखाने वाले भी माता पिता ही होते हैं,..क्योंकि कभी जिम्मेदारियों के चलते,..कभी समयाभाव में कभी

आर्थिक समस्याओं के कारण कभी सिर्फ अपने शौक के लिए माता पिता बच्चों को चॉकलेट खिलौने और नए कपड़ों की रिश्वत देते हैं,...बचपन से ही ये सीख दी जाती है किसीके लिए कुछ करने के बदले कुछ मिलेगा,...यही सीख हमारे भविष्य का दर्पण ये उस वक़्त समझ ही नहीं पाते,..

आज एकल छोटे परिवारों में अक्सर देखा जाता है,..बच्चों को हर चीज जरुरत से ज्यादा मिलती है,..हर माता पिता अपने बच्चों के लिए अपनी अधिकतम व्यय क्षमता का उपयोग करता है,..कभी सोचते ही नहीं कि ज्यादा लाड़ दुलार की अति का परिणाम क्या होगा,...???

एक उदाहरण,..जैसे बच्चों को पहले खूब चॉकलेट खिलाई जाती है फिर जब दांत सड़ जाते हैं तब उसके दांतों का इलाज कराया जाता है,...जाहिर है इलाज के बाद भी बच्चे को जीवन भर दांतो के कमजोर होने और संक्रमण की समस्याओं से जूझना होगा,.. बिलकुल वैसे ही चॉकलेट या मनपसंद चीजों का लालच का परिणाम जिंदगी भर संक्रमित दांतो की तरह ही भुगतान होता है,..

अब यही बात गरीबी हटाओ के सन्दर्भ में सोची जाए,...गरीब को सहायता स्वरुप हम काम देने से ज्यादा उसपर तरस खाकर दान देकर या छूट देकर पंगु बनाते हैं,... सब नहीं पर अधिकतर लोग इन सुविधाओं का गलत उपयोग करते हैं,...जब बिना मेहनत के जरूरतें पूरी होंगी तो काम कौन करना चाहेगा,.. और तब इन रियायतों और सुविधाओं की अति अनेक समस्याओं को जन्म देती है,..।

आजकल आमतौर पर एक और समस्या से और रुबरु होते हैं हम अकसर,..एक तरफ स्त्री को अबला कहकर एक से बढ़कर एक नियम और कानून व्यवस्थाएं बनाई गई हैं,..दूसरी तरफ महिलाओं को बराबरी का दर्ज़ा देने की बात,..व्यभिचार और अनाचार के फैले हुए वातावरण में कहीं इन कानून व्यवस्थाओं का अधिक लाभ तो नहीं उठाया जा रहा या यूं कहा जाए अति सुरक्षात्मक और सहयोगात्मक रवैये का दुरुपयोग तो नहीं हो रहा हैं,..???

कुल मिलाकर मुझे तो यही लगता है कि बच्चे,गरीब या महिलाऐं ही नहीं बल्कि हर बात में हर क्षेत्र में "अति" सुरक्षात्मक और सहयोगात्मक और सहानुभूतिपूर्ण व्यव्हार

दुरपयोग को बढ़ावा देता है और यही नैतिकता की पंगुता का जनक भी बनता है,..।वैसे भी ये बात बिलकुल सच है की कहावतें और मुहावरे कसौटियों पर कैसे जाने के बाद ही बनते हैं,... और हम सब ने कभी न कभी सुना तो होगा ही **"अति सर्वत्र वर्जयेत"**

यूं ही चलते चलते :-

एक बात कहूं,.. मानोगे??

सदा रहना सजग सचेत

एक गुरु मन्त्र सीखा मैंने

"अति सर्वत्र वर्जयेत",...प्रीति सुराना

साहित्य की मञ्जूषा है 'अंतरा शब्द शक्ति': कान्ता रॉय

कान्ता राय

अंतरा शब्द शक्ति मासिक वेब पत्रिका का सितम्बर अंक पढ़ते हुए ऐसे डूबी कि सीधे अंतिम पेज तक जा पहुंची. रचनाओं का संयोजन साहित्यिक परिवेश को समृद्धि देने वाली है. इस साल का यह तीसरा अंक है। 84 पन्नों से सुशोभित पत्रिका का मुख्यपृष्ठ हिन्दी दिवस को समर्पित है। मनोज जैन 'मधुर' के संरक्षण में प्रीति सुराणा की सम्पादकीय सराहनीय है।

गीत-नवगीत, कविता, गजल, दोहे, हाईकु, मुक्तक, लघुकथा और रिपोर्ट से सजी अपने आप में सम्पूर्ण पत्रिका है। आलेख, संस्मरण, पुस्तक समीक्षा से युक्त बाल-कविता, साक्षात्कार इत्यादि से सजी पत्रिका सम्पूर्णता को परिभाषित करती है. पाठकों की बौद्धिक क्षुधा को तृप्त करती पन्ने-दर-पन्ने रोचकता से भरपूर है.

प्रीति समकित सुराणा की सम्पादकीय पढ़ते हुए मौन की भाषा जिस तरह विवेचित हुई है वह गहन चिंतन-मनन की उपज की फसल है। 'फिर कई अनुबंध टूटे' ममता बाजपेयी की रचना तपिश लिए विसंगतियों के कई परतों को टटोलती जाती है। 'फिर गिरी खुशियाँ फिसलकर साँप सीढ़ी की तरह....' मन को उद्वेलित करती है। 'गाँव की यह सड़क कच्ची' शहर की ओर सूखे की मार सहता, रोम-रोम कर्ज़ में डूबा देहात का दर्द खूब उभरकर आया है शिवानंद सिंह 'सहयोगी' जी की रचना में।

'चारों ओर लगे हैं अपने, उलझे प्रश्नों के घेरे' सत्यप्रसन्ना जी अपने चिर-परिचित अंदाज़ में गम्भीर विषय के साथ उपस्थिती दर्ज करा रहें हैं। गंगा के महात्म को वर्णित करती मीरा भार्गव जी की कविता पढ़कर अच्छा लगा है। राजकुमार 'बैरवा' की रचना बचपन और जवानी, जीवन के सत्य से दो-चार हाथ करते यादों के गलियारे में लेकर जाती है। डॉ. मीनू पाण्डेय जी की कविता, शब्दों में बेहद तीक्ष्ण धार लिए हृदय में उतरती हुई छील कर रख देती है।

अर्विना गहलोत जी की रचना हिन्दी की पहचान को शाब्दिक अर्थ देती है। डॉ. पंकज मिश्र 'निश्छल' की कविता में कविमन के भाव कैसे कविता बन कर

निकलती है, इस तरह कहते हैं कि "जब हिय में होता घाव कोई, उससे होकर यह बहती है" सही कहा है, कविता यूँ ही नहीं बहती है. संजय वर्मा 'दृष्टि' की कविता में हिंदी में अंग्रेजी की मिलावट पर बढ़िया कटाक्ष रोपित हुई है. अर्पणा झा की कविता में पति-पत्नी की रिश्तों का अनुबंधन का मीठा सोता बहता हुआ मन को तरंगित कर गया है. सुधेश जैन की सद्भावना से युक्त पंक्तियाँ साकार को स्थापित करने में सफल रहीं है. 'हिंदी बहती नीर सी' जैसी कविता में शब्दों और भावों का संयोजन सम्मोहन पैदा करती है. अनीता मंदिलवार 'सपना', जयति जैन 'शानू', डॉ.आरती कुमारी, मीनाक्षी सुकुमारन, शशि सिंह, सतेन्द्र सेन सागर, बलराम भगत, कवि राजेश पुरोहित, संजय अश्क बालाघाटी, शीरीं भावसार, सुनीता लुल्ला, मनोज जैन 'मधुर', आदित्य राजौरिया'अजनबी', कैलाश बिहारी सिंघल, किरण मिश्रा, दिनेश रघुवंशी, बीना शर्मा 'झकार', ब्रजेश शर्मा 'विफल', जय कृष्ण चांडक की कविताएँ सामाजिक विविध पहलुओं को समग्रता से पेश करती है.

पूनम झा की लघुकथा 'ईर्ष्या' एक कमजोर चुनाव है. यहाँ सम्पादक की नजर रचना चयन में कमतरी को सामने लाती है. चंचल पाहुजा की लघुकथा 'नर्क' अत्यंत प्रभावी लघुकथा है. शब्द मसीहा की दोनों लघुकथाओं 'जलना और लड़ना' और 'जागरण' ने समाज की मानसिकता पर नई दृष्टिकोण स्थापित कर चिंतन पर विवश कर रचनाकर्म की उत्कृष्टता से पत्रिका की शोभा बढ़ायी है, ऐसा मेरा मानना है. रूबी प्रसाद की लघुकथा 'आई लव यू' पति-पत्नी के सबंधों में बिगड़ते-बनते तारतम्य को रेखांकित किया है. साहित्यिक गतिविधियों पर पत्रिका अपनी नजर बनाए हुए देश-देशांतर में हुए सार्थक प्रयासों को भी चिन्हित करती है.

चौ.मदन मोहन द्वारा आलेख 'गाय को सूअर की तरह मत पालों' प्रभावी है.'भारतीय चिंतन में हिंदी का विकास' के लिए डॉ. भारती वर्मा बौडाई को बधाई देना चाहूंगी.आलोक कुमार सिंगरौली की 'बलात्कार' कायरपूर्ण घृणित सोच या बीमारी' के जरिये उन्होंने एक तमाचा मारा है,युवा पीढ़ियों द्वारा इस तरह का आलेख आना सुनहरे कल के प्रति आश्वस्ति का भाव जगाता है.

'सफ़र जो ठहर गया स्मृतियों में' पवन अड़ोरा की इस सफरनामे में कुछ पलों की साझेदारी करते हुए मैं भी गवाह रहीं हूँ, आत्मीय क्षणों को बेहद गहरी अनुभुतिओं से शब्दांकन किये हैं. एक सशक्त कहानीकार का कहानी के प्रति दृष्टिकोण पढ़ना अच्छा लगा. 'आसमानी आँखों का मौसम' कहानी संग्रह, लेखिका संतोष

श्रीवास्तव की कृति की पुस्तक समीक्षा मुकेश दुबे द्वारा, पढ़ते हुए पुस्तक के प्रति पाठकों में कौतुहल जगाता है. 'मालिश महापुराण' व्यंग्य लेखों का संकलन लेखक डॉ.सुशील सिद्धार्थ की पुस्तक समीक्षा देवेन्द्र सोनी द्वारा रोचक व् पठनीय है. अवधेश कुमार 'अवध' को पिंकी परुथी "अनामिका" द्वारा साक्षात्कार पढ़कर आज ही जाना है. राजेन्द्र श्रीवास्तव, मुकेश कुमार ऋषि, की बाल कविताएँ कोमल मन को देशप्रेम की राह सुझाती है.

पढने के पश्चात और अधिक कुछ नहीं बस इतना ही कहना चाहूंगी कि हिंदी साहित्य की लगभग सभी विधाओं को सामानता से स्थान देती चिंतन-विमर्श से युक्त खट्टी-मीठी चटकार, सावन की ठंडी फुहार-सी रिमझिमाती साहित्य की मञ्जूषा है 'अंतरा शब्द शक्ति'. एक बार फिर शुभकामनाएं ज्ञापित करती हूँ अंतरा परिवार को...

कान्ता राय,
मकान नम्बर-21,सेक्टर-सी सुभाष कालोनी,
नियर हाई टेंशन लाईन, गोविंदपूरा
भोपाल- 462023, फोन - 9575465147
ई-मेल- roy.kanta69@gmail.com

मनोज जैन

दीप जलता रहे

नेह के ताप से
तम पिघलता रहे
दीप जलता रहे।।

शीश पर
सिंधुजा का
वरद हस्त हो,
आसुरी
शक्ति का
हौसला पस्त हो,
लाभ-शुभ की
घरों में
बहुलता रहे।
दीप जलता रहे।।

दृष्टि में
ज्ञान-विज्ञान
का वास हो,
नैन में
प्रीत का दर्श
उल्लास हो,
चक्र-समृद्धि का
नित्य
चलता रहे।
दीप जलता रहे।।

धान्य-धन,
सम्पदा
नित्य बढ़ती रहे,
बेल यश
की सदा
उर्ध्व चढ़ती रहे,
हर्ष से
बल्लियों दिल
उछलता रहे।
दीप जलता रहे।।

हर कुटी
के लिए
एक संदीप हो,
प्रज्ज्वलित
प्रेम से
प्रेम का दीप हो,
तोष ,
निरोगिता की,
प्रबलता रहे।
दीप जलता रहे।।

मनोज जैन, भोपाल

कल्पना मनोरमा

पर कहो कैसे,..???

तोड़ डालीं वानरों ने
डालियाँ सब प्रेम वाली
अब कहाँ नन्ही बया रुक
घोंसला अपना बनाये ।

दिखता रहा था दूर से
हर वृक्ष छायादार होगा
पास में जब -जब गई तब,
अजब -सा संत्रास भोगा

पी गई सारी उमंगें,
लू भरी पछुआ हवाएँ
अल्पनाएँ वह कहाँ,
किस डाल पर अपनी सजाये ।

दे दिया आकाश उड़ने को
कतर कर पंख सारे
होंसलों को जब जगाया
मिल गए ठग,बाज द्वारे

सभ्यता के नाम पर
नीलाम उपवन हो रहे हैं
देखर उजड़े चमन को
किस तरह वह मुस्कुराये

ले शिकारी जाल रेशम का
चुगाता रामदाना
मुँह चिढ़ाती भूख निर्मोही
सुनाती रोज ताना

है पलासी भोर ,उन्नत -सी
दिशाएँ मोरपंखी
पर कहो कैसे, बया
निश्चिंत होकर चहचहाये ।

-कल्पना मनोरमा, बिहार

जगदीश पंकज

विरोधीपन

कल तलक था धुर विरोधीपन
अब समर्थन में
गरजते हैं

जब असंगत मेह की बूंदें
है बरसती
ले विषैला जल
अम्लता की पोटली खोले
आंगनों में
फ़ेंकतीं हलचल
अब नज़र मिलती नहीं उनकी
मंच पर ही
रोज सजते हैं

तर्जनी अपनी उठाकर अब
भीड़ को
संकेत देते हैं
कुछ भली उच्छिष्ट सुविधाएं
मौन हो
प्रतिदान लेते हैं
खंजड़ी बनकर कुतर्कों की
शान से दिन-रात
बजते हैं

जब समर्पण भी किया खुद ही
और समझौते
किये झुककर
वक्त की निर्मम गवाही को
सोचता है कौन
अब रूककर
कामना विपरीत कागज़ सी
हवा में लेकर
लरजते हैं

-जगदीश पंकज

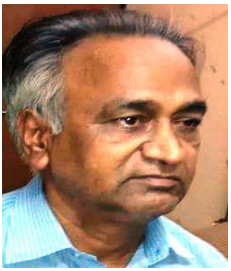

बृजनाथ श्रीवास्तव

राजधानी

है कहां
सहकार में अब
राजधानी

सम्बन्ध टूटे
प्रतिबंध छूटे
होते गये सब
अनुबंध झूठे

है कहां
संचार में अब
राजधानी

बौने हुए हैं
पौने हुए हैं
तीरों बिंधे मृग-
छौने हुए हैं

है कहां
आचार में अब
राजधानी

खिड़कियाँ सोई
तितलियाँ खोई
झर अश्रु आँखें
बदलियाँ रोई

है कहां
उपचार में अब
राजधानी

बृजनाथ श्रीवास्तव

गीत-नवगीत

ब्रजेश शर्मा 'विफल'

कोई रहे न भूखा प्यासा जलता एक चराग़ रहे,
दीन दुखी निर्बल जन के प्रति सबके मन अनुराग रहे ।।

हे गण नायक बुद्धि प्रदायक करुणा से मन आपूरित कर,,
मोहनिशा के तिमिर भरे पथ अपने वर से आलोकित कर,
प्रेम सुधा नयनों से बरसे मौसम मौसम फ़ाग रहे ।।।
कोई रहे न भूखा प्यासा...

हे कमलासिनी कमलनयन माँ सबके घर भण्डार भरो ।।
कलुषित मन और चित्त अपावन करुणा मयी उद्धार करो ।।
पंचम स्वर में गूँगों का भी आज तो राग विहाग रहे ।।
दीन दुखी निर्बल जन के प्रति.....

देहरी देहरी उजियारे का जो भी अलख जगाता है,
जीना उसका जीना है जो बुझते दीप जलाता है,
राम लखन लौटेंगे सिय संग क्षुधित नयन में जाग रहे ।।
प्रेम सुधा नयनों से बरसे.....

एक दीप उन सबके ख़ातिर लौट के घर न आये जो,
चैन सुकूँ हमको देने को काल के गाल समाये जो,
दीवाली का मतलब है अंतर में धधकती आग रहे ।।
कोई रहे न भूखा प्यासा .....

ब्रजेश शर्मा 'विफल'

शब्द मसीहा

बहुत जला नफरत से इंसा , कोई राह तलाशी जाये

मठों मस्जिदों से बाहर की ,
दुनिया नई तलाशी जाये

नहीं किसी को भी देखा
रहा ख़ुदा मौतों पर मौन
अगर नहीं ख़ुद खुदा बनोगे
यह आंसू फिर पोंछेगा कौन
प्रेम-प्यार से बढती दुनिया
नफरत मौत के जैसी है
जहाँ पे केवल प्यार पले
जगह कोई तलाशी जाये

मठों मस्जिदों से बाहर की ,
दुनिया नई तलाशी जाये

कहाँ गयीं वो अच्छी बातें
नजर में केवल आती घातें
बात-बात पर झगड़े होते
चलते हैं घूंसे और लातें
संघ बने हैं , झुण्ड बने हैं
मन तो ज्वाला कुण्ड बने हैं
जहाँ हवन हो प्रेम-प्रीत का
जगह कोई तलाशी जाये

मठों मस्जिदों से बाहर की ,
दुनिया नई तलाशी जाये

बहुत पढ़ लिया और ये देखा
समझदारियां नहीं बढ़ी हैं
गुटबंदियां केवल सोचों की
कोई राह प्रेम की लाई जाये
कितनी नदियाँ सूख गयी हैं
कहाँ ये ज्वाल मिटी मन की
एक मुहब्बत की नदिया फिर
दुनिया में नयी कोई लाई जाये

मठों मस्जिदों से बाहर की ,
दुनिया नई तलाशी जाये

शब्द मसीहा

संजीव 'सलिल'

दोहा गीत :

हिन्दी का दुर्भाग्य है...

*

हिन्दी का दुर्भाग्य है,
दूषित करते लोग.....

*

कान्हा मैया खोजता,
मम्मी लगती दूर.
हनुमत कह हम पूजते-
वे मानें लंगूर ।1।

सही-गलत का फर्क जो
झुठलाये है सूर.
सुविधा हित तोड़ें नियम-
खुद को समझ हुज़ूर ।2।

चाह रहे जो शुद्धता,
आज मनाते सोग.
हिन्दी का दुर्भाग्य है,
दूषित करते लोग ।3।

कोई हिंगलिश बोलता,
अपना सीना तान.
अरबी के कुछ शब्द कह-
कोई दिखाता ज्ञान ।4।

ठूँस फारसी लफ्ज़ कुछ
बना कोई विद्वान.
अवधी बृज या मैथिली-
भूल रहे नादान ।5।

माँ को ठुकरा, सास को
हुआ पूजना रोग.
हिन्दी का दुर्भाग्य है,
दूषित करते लोग ।6।

गलत सही को कह रहे,
सही गलत को मान.
निज सुविधा ही साध्य है-
भाषा-खेल समान ।7।

करते हैं खिलवाड़ जो,
भाषा का अपमान.
आत्मा पर आघात कर-
कहते बुरा न मान ।8।

केर-बेर के सँग सा
घातक है दुर्योग.
हिन्दी का दुर्भाग्य है,
दूषित करते लोग ।9।

संजीव 'सलिल'

दोहा

राजेन्द्र'अनेकांत'

एक स्वर मे विश्व करे,
माँ चरणों मे वंदन।
माँ की ही मुस्कान तो ,
प्राणी मन का चंदन।1।

'अनेकांत'की कलम मे ,
इतनी ना सामर्थ,।
माँ महिमा मे लिख सकूँ,
माँ जीवन का अर्थ।2।

माँ महिमा गुणगान से,
होगा क्या कविराज।
गली गली मे दुखी माँ,
कितना दुष्ट समाज।3।

कलम चलाओ इस तरह,
माँ का ऋण हो याद।
माँ के कुछ उपकार को,
लिखो लेखनी साध।4।

इन भावों से ही मिला,
'अनेकांत को ज्ञान।
माँ के कुछ उपकार को,
लिखता यह नादान।5।

आस्तिक जन की आस्था,
यदि धर्म मे आज।
माँ सेवा के काम को,
जाग्रत करे समाज।6।

गर्भकाल के दुखों को ,
जान सके न कोय।
हँसते हँसते सहे माँ,
मीठे भाव सँजोय।7।

धीरे धीरे संभल माँ,
चलती है.अब चाल।
किंचित भी न कष्ट होय,
बस शिशु हो खुशहाल।8।

बस ऐसा संगीत ही,
जो शिशु मन को भाय।
निकले माँ के कण्ठ से
गर्भस्त शिशु हरषाय।9।

माँ नित ऐसा सोचती,
बेटा बने महान।
यदि बेटी का जन्म तो,
देवी गुण की खान।10।

राजेन्द्र'अनेकांत'

संजय वर्मा 'दृष्टी '

आज का रावण

कलयुग है कलयुग
आज का रावण
एक नहीं हर जगह
दिखाई देने लगे
खूनी खेल, बलात्कार ,
पाखंड ,दबाव डालना
आदि क्रियाएं
प्राचीन रावण को भी पीछे
छोड़ती दिखाई देने लगी
आकाशवाणी मौन
सब बने हो जैसे धृतराष्ट्र
जवाब नहीं पता किसी को
जैसे इंसान को सॉप सूंघ गया
 आवाज उठाने की
 हिम्मत होगई हो परास्त
शर्मो हया रास्ता भूल गई
पहले के रावण का अंत
नाभि में एक बाण मार कर किया
आज के रावणों का अंत
कानून के तरकश में न्याय के तीर ने
कर डाला
जो उनको मानते /चाहते अब वो ही
उनसे मुँह छुपाने लगे
कतारे लगी जेलों में
उनकी अशोभनीय हरकतों से
आज के रावणों ने
आस्था के साथ खिलवाड़ करके
मासूमों का हरण करके
कई चीखों को दफ़न कर दिया
आज के इन रावणों ने
पूरी दुनिया इनकी हरकतों को
देख थू थू कर रही
आवाज उठाने वालों और न्याय ने मिलकर
किया शंखनाद
उखाड दी इनकी जड़
गर्व है हिंदुस्तान के न्याय पर हमें
और ख़ुशी आज के रावणों के अंत की
मगर चिंता अब न हो कोई
आज के रावण जैसा पैदा
हिंदुस्तान धरा पर

संजय वर्मा 'दृष्टी '
१२५ शहीद भगत सींग मार्ग
मनावर जिला धार (म प्र)

कविता

जयति जैन 'शानू'

जीएसटी

मैं सो रही थी मुझे उठाया गया,
नींद में ही गाडी में बैठाया गया !
होश में आती उससे पहले ही बताया गया,
व्यापारियों का खून चूसने जीएसटी लगाया गया !

अधिकारी के दफ़्तर संग लाया गया,
टेक्स का सारा दुख जताया गया !
टेक्स का सारा दुख जताया गया,
मुझे अधिकारी के दफ़्तर लाया गया !

बोले पहल तुम करोगी हमारी,
दलदल में मुझ बेचारी को फसाया गया !
मुझ बेचारी को दलदल में फसाया गया,
व्यापारियों का एक एक दुख सुनाया गया !

कौन हो तुम, आयी हो कहां से ?
आंखें दिखाकर मुझपर चिल्लाया गया !
आंखें दिखाकर मुझपर चिल्लाया गया ,
फ़िर भीड़ से मेरे बारे में पुछ्वाया गया !

समाज सेविका जान दफ़्तर में बुलाया गया,
फ़िर जीएसटी का मतलब समझाया गया !
जीएसटी का मतलब समझाया गया,
जनता को समझाने का काम दिलाया गया !

नींद - नींद में सफल लीडर बनाया गया ,
लीडर बन मंच पर भाषण सुनाया गया !
लीडर बन मंच पर भाषण सुनाया गया ,
नींद खुली तो खुद को बिस्तर पर पाया गया !

युवा लेखिका- जयति जैन 'शानू'
रानीपुर झांसी उ.प्र.

अर्विना गहलोत

झिलमिलाते दीप

झिलमिलाते दीप जलने लगे

चाँद आज परदेसी हो गया ।
उजाले की लड़ी देख कर
तिमिर भी दूर कौने में खड़ा हो झांके।
रात की कालिमा भी धीरे-धीरे भागे।

झिलमिलाते दीप जलने लगे।

ज्योति पर्व की आज बेला है।
नन्हे दीप का नन्हा ह्रदय आज ।
स्नेह घृत से है भरा हुआ ।
मन का आंगन आलोकित हुआ।

झिलमिलाते दीप जलने लगे।

शाम भी आज दूर खड़ी किनारों पर ।
ऐसे लजाए जैसे दुल्हन आई हो ।
तन में सिहरन ,मन में पुलकित भाव लिए।
जैसे झिलमिल दीपों के क्षण आ बैठे हों पलकों पर ।

झिलमिलाते दीप जलने लगे ।

उजियारे का स्वप्न लिए सुहाना ।
 याद किया जब प्यार पुराना।
दो मोती लुढ़के गालों पर ।
तुम्हें समर्पित दीप मालिका ।

झिलमिलाते दीप जलने लगे ।

अर्विना गहलोत

जितेश गौतम

लिखूँगा

"जहाँ ना पहुँचे रवि वहाँ कवि "
इस युक्ति को साकार लिखूँगा...
समय सीमा के उस पार लिखुँगा,
शोषित, कुपोषित और अबला के रोषित
रूदन का व्यवहार लिखूँगा,
"जहाँ ना पहुँचे रवि वहाँ कवि "
इस युक्ति को साकार लिखूँगा...

कर्मयोगी और कृत संकल्पों के संस्कार
लिखूँगा।
महापुरुषो और युगपुरूषो के आचार
लिखूँगा।
मन की जिज्ञासा, कल्पना-शक्ति के आधार
लिखूँगा,
"जहाँ ना पहुँचे रवि वहाँ कवि "
इस युक्ति को साकार लिखूँगा...

जीवनपथ पे आने वाली मुश्किलों के आकार
लिखूँगा,
और सृजनशक्ति के विचार लिखूँगा।
प्रत्यय ,उपसर्ग और अलंकार लिखूँगा,
और लिखने को कुछ ना मिले तो भी सरल
विचार लिखूँगा।
"जहाँ ना पहुँचे रवि वहाँ कवि "
इस युक्ति को साकार लिखूँगा.....

क्रांति की नई ललकार लिखूँगा,
जो आम मनुष्य के मन को छू जाए ।
ऐसे विचार लिखूँगा,
व्याकुल मन और उग्र वेग के ज़्वार
लिखूँगा।
"जहाँ ना पहुँचे रवि वहाँ कवि "
इस युक्ति को साकार लिखूँगा...

सम्यक मार्ग ,सम्यक वाणी,त्रि-रतन जैसे
दर्शनों के अंगीकार लिखूँगा।
अपने वरिष्ठों के विचार लिखूँगा,
नारी को पीड़ा देने वालों विचलितों के
विकार लिखूँगा।
"जहाँ ना पहुँचे रवि वहाँ कवि "
इस युक्ति को साकार लिखूँगा.....

जितेश गौतम

निरुपमा सिन्हा

लड़ाई अपने आप से !!

शरीर के
किसी ऊभरे हुए हिस्से पर
एक गाँठ का
निकल आना
बदल देता है
जीवन के शब्दों का शब्दकोश
शामिल हो जाता है
हस्पताल
मेमोग्राफी
बायोप्सी
रेडियेशन
कीमो
और
ऐसी ही न जाने कितनी
शब्दावलियाँ
जिनके उच्चारण
मुश्किल से होते थे
जब
हमने सिर्फ प्रेम पढ़ा
प्रेम जिया था
तमाम सच्ची कहानियां
उत्साह से सुनाती है
भोगी हुई जिंदगियाँ
उसके
आंसुओं को पोछ
काँधा थपथपाती सखियाँ
हौसलों को उड़ान देते
कह जाती हैं
"बहुत बहादुर है तू जीतेगी ये जंग "
कष्टों की पाठशाला से
चीखती है वो
कोई सुन नहीं पाता
एक फीकी मुस्कान
तरबतर अहसासों से
वो लिपट जाती है
अपने अतीत से
मेरी रातों की नींद
शामिल हो चुकी है उसकी पीड़ा में
उससे मिल कर बताना चाहती हूँ
कि गुज़र रही हूँ मैं भी
तुममें बह कर
लेकिन "कहानी सुनना"
और
"कहानी का पात्र ख़ुद बनना "
जीते जी मार देता है !

निरुपमा सिन्हा

शिरीन भावसार

अवरुद्धता

अवरुद्ध हो जाती है
कलम मेरी
स्याही जम जाती है
शुष्क बर्फ की मानिंद....
कुछ शब्द बहते नही
स्थिर हो जाते हैं
नदी की चट्टान की भाँति
गतिहीन.....
हर भाव, बहाव
ठहरता है वही
कुछ वक्त के विराम पर.....
ठहराव
मंथित करता है
विचारों को ,आत्म बल को
जीवन को, जीवन दर्शन को....
कई बार अवरुद्धता
सकारात्मकता दर्शाती है....
नये दृष्टिकोण का
उद्गम करती है....
उसी प्रकार जैसे
सूर्य से तापित हो
ग्लेशियर भी
प्रवाहमान हो जाते है.....
नदी के जल की भाँति जो
स्थिर चट्टान से टकराती है
कुछ पल ठहरती है
बिखरती है
अवरुद्ध होती है....
और पुनः राह तलाश
प्रवाहित हो जाती है.....
अवरुद्धता समापन नही
पुनर उद्गमन है....
विचारों का, जीवन का
जीवन दर्शन का.....

शिरीन भावसार
इंदौर (म. प्र.)

संजय कुमार 'संज'

एक मौसम मेरे मन का

कौन कहता है कि
सिर्फ चार मौसम है चमन में
एक मौसम मन का भी है जीवन में
मन के मरू भूमि पर
तन्हाई का एक जंगल घनघोर
उम्मीदों के हैं कुछ झड़ते पत्ते
ठूंठ बना शरीर कमजोर
किसी की खुशियों ने बनाया
खिलते फूल बसंत बहार
नम आँखों ने रुलाया
सावन भादों विरह अपार
लिपटी रही बेल की तरह तुम
अपने हीं मौसम में
अब जो है वीतरागीपन तो
सारे ऋतु एकाकीपन में हैं गुम
जो था अक्षत हर मौसम में संज
अब वो है क्षत-विक्षत एक कटु-वृक्ष
स्मृतियों के पुल बनाता हूँ टूटे पत्तों से
गाता हूँ विरह गीत अब हर मौसम में
कौन कहता है कि
सिर्फ चार मौसम है चमन में
एक मौसम मन का भी है जीवन में,...

संजय कुमार 'संज'

सुरेखा 'स्वरा'

स्वीकृत मौन

तुम्हारे मौन चेहरे में
अक्सर ढूँढती हूँ कई वादें
जानती हूँ वापसी सम्भव नही
फिर भी एक उम्मीद से
तकती हूँ एक राह ...!
वाष्पित होते वह
विष रूपी भाव
स्याह से नीले
वह देह के जख़्म
मौन स्पंदन
की एक तास्मिक
परिधि देती अनंत काल
तक का एक स्वीकृत
मौन विराम
तटस्थ विदाई
और कभी ना
लौटने वाला
एक प्रतीक्षित इंतज़ार
अब अलग है निश्चित
ही हमारे अपने अपने
अँधेरे और उजाले...

भोर सी तमस मेरी
और स्याह सी
उजली भोर तुम्हारी..!

सुरेखा 'स्वरा'

कविता

अदिति रूसिया

आदत

हाँ !
आदत सी हो गई अब तो
तन्हाइयों में रहने की
तुम्हें मेरी बातों से तकलीफ़ होती
जबकि जानते तुम हो
हर बात मेरी सच्ची होती
फिर जाने क्यों तुम
इतनी सी बात समझ न पाते
या फिर समझ के भी
करते नासमझी की बातें
रुठना मानना हुआ अब बहुत
कुछ तुम बदलो कुछ हम
बदले अपनी अपनी आदतें
फिर न ये तन्हाई होगी
न होंगी शिकवे शिकायतें
होगा तो बस एक प्यारा एहसास
ज़िंदगी जीने का नया अंदाज़

अदिति रूसिया

कविता

मुकेश कुमार ऋषि वर्मा

सिर्फ तुम्हारे लिए

धडकता है दिल तुम्हारा
मेरे सीने में
कहो कैसे
समझाऊं इस नादान को
बस तुम्हारा ही नाम लेता है
मेरी कब सुनता है |
तुम इसे भाव नहीं देते
दिल ये बीमार सा रहता है |

तूने तो कह दिया
मुझे बेवफा
पर मैं बेवफा नहीं
आ के देख....
कर महसूस
तुम बसे हो मेरी सांसों में
कहो कैसे रोक दूं इन्हें
ये आती - जाती हैं
सिर्फ तुम्हारे लिए |

मुकेश कुमार ऋषि वर्मा
फतेहाबाद-आगरा

मुक्तक

रजनी कोठारी "भारतीय"

न जानें क्यू अज़ीज वो लगने लगा मुझे।
दिल के बड़े करीब वो लगने लगा मुझे
इस ज़िंदगी में इश्क की ख़ुशबू बिखर रही।
खुल जाये ये नसीब वो लगने लगा मुझे ।1।

मुझ पे हर वक़्त वो अहसान जता जाता है।
नही हस्ती मेरी अहसास दिला जाता है।
उसी के नाम कर रखी है हर ख़ुशी मैनें।
बड़े ही प्यार से ज़हर वो पिला जाता है। 2।

लम्हा लम्हा तोडा मुझको इन अंतस की आसों ने।
तू न आया लाल मिरे अब साथ भी छोडा सांसों ने।
कतरा कतरा ज़िस्म का मेरा तुझको रहा पुकारता।
कंकाल हुई पर याद न आई तुझको इतने मासों में ।3।

आकर मेरे पहलू में वो रोकर चला गया
सारे अज़ाब अपने वो धोकर चला गया
कहने को तो दुश्मन से भी बदतर था वो मगर
इस दिल में बीज प्यार के बोकर चला गया।4।

प्यार में उसकी अब है वो बातें कहां
ख़ास बनती थी वो मुलाकातें कहां
कितना अरसा हुआ याद हमको नही
बात पर यूँ ही गुजरी वो रातें कहां ।5।

रजनी कोठारी "भारतीय"

मुक्तक

विनोद तिवारी 'मानस'

है इल्तिज़ा कि छोड़ अदावत के रास्ते।
देंगे तुझे सुकून शराफत के रास्ते।।
तेरा कुसूर है कि तू सीधा, गरीब है;
मँहगे हुए हैं थाने,अदालत के रास्ते।1।

नज़ारे खूबसूरत हैं, मगर तू ना नजर आया।
नशा तेरी मुहब्बत का, सनम दिल में उतर आया।
बिना तेरे पड़ा सूना, चमन मेरी मुहब्बत का,
तुझे ढूंढ़े कहाँ जाकर, भटक में दर बदर आया।2।

केशर सेव आज मुरझाये काश्मीर की वादी के।
जले तिरंगा नारे लगते भारत की बर्बादी के।।
सैनिक में पड़ते हैं पत्थर,लातें, डंडे अरु गोली;
मौन साधकर बैठे हैं वो पहने कपड़े खादी के।3।

ख्वाब में आये वो जब से शब सुहानी हो गईं।
खार वाली झाड़ियाँ भी रातरानी हो गईं।
आ रहे झोके हवा के छू के जब उनका बदन;
खिड़कियाँ सारी ही घर की इत्रदानी हो गईं।4।

याद जब-जब भी उनकी आई है।
रात रोकर के फिर बिताई है।।
ज़ख्म ये गैर के नहीं 'मानस';
हमने अपनों से चोट खाई है।5।

विनोद तिवारी 'मानस'

हाइकु

कैलाश बिहारी सिंघल

1--दीपावली है
तन मन धन से
लक्ष्मी पूजन।

2--महालक्ष्मी जी
महा सरस्वती जी
महादुर्गाजी।

3--धन्वंतरि जी
आयुर्वेदाचार्य है
धन तेरस।

4--रूप चौदस
महादुर्गा पूजन
जमुना स्नान।

5--महा दिवाली
लक्ष्मी गणेश पूजो
बही पूजन।

6--उल्लासमयी
हिन्दू त्योंहार है
वैश्य वर्ण का।

7--रामजी आये
असुर मारकर
दीपक जले।

8--दीपमालिका
घर आंगन सजे
मन साफ हो।

9--दूर कर दो
भेद भाव अंधेरे
खुशियाँ मने।

10-कर्म दीप से
धन की पूजा करो
संकल्पित हो।

11-पर्यावरण
रक्षण भी करना
जवाबदारी।

12-दीपावली की
सभी को बधाइ हो
माँ का आशिष।

कैलाश बिहारी सिंघल

हाइकु

डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

1-- दीपमालिका
करे सुशोभित
सबके घर।

2-- बनें अपने
पराये भी इसमें
कहे दीवाली।

3-- मने उत्सव
जुड़ें बिखरे रिश्ते
हो दीपोत्सव।

4-- हों बच्चे सँग
सपने अपने लगे
तभी दीवाली।

5-- सोचे बुढापा
टूटे ये सूनापन
मने दीवाली।

6-- लगे तोरण
लहराते कंदील
हँसते घर।

7-- हुआ आरंभ
सिलसिला पर्वों का
लाया उल्लास।

8-- जिनके घर
थमे अंधेरे वहाँ
जलाएँ दीप।

9-- देवे उजास
स्वच्छ्ता दीप पर्व
करें प्रयास।

10--मन से जोड़ें
भेदभाव जाति के
मिलके तोड़ें।

11--राह बनायें
खुशियाँ डोलें द्वार
सभी मुस्कायें।

12--खील बताशे
प्रसादी पाते बच्चे
करें तमाशे।

डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

ग़ज़ल

सुरेन्द्र श्लेष

1.

धूप इतनी तेज़ थी हम पाँव से सर तक जले
देखिये तो दोस्तों हम चार दिन कितने चले

अब नहीं पहचान पाता है हमें ये आइना
क्या पसीने से हमेशा लोग इतने ही गले

ऐ शरीफों राह तो ये आम है पर सावधान
हर गली के मोड़ पर पड़ने लगी मुश्किल गले

उम्र के इस हाशिये पर मैं खडा हूँ, ठीक है
वक़्त थोड़ा है अगर कुछ सीखना है सीखले

हुस्न अपनी ज़ुल्फ़ लहरा कर चला घर से कहीं
हो न जाएँ राह में पैदा कहीं कुछ मसअले

2.

गा चुके ज़िन्दगी, रो चुके ज़िन्दगी
तू मिली थी, तुझे खो चुके ज़िन्दगी

वस्ल में जी चुके, हिज्र में जी चुके
जो मिला था यहां खो चुके ज़िन्दगी

आँख से खून गिरना नहीं रुक सका
ज़ख्म दिल के बहुत धो चुके ज़िन्दगी

जब कभी साँवली सी घटाएं घिरीं
बारिशों में धुआं हो चुके ज़िन्दगी

सामने वो रहे बात कब कर सके
हौसला हम कहीं खो चुके ज़िन्दगी

@सुरेन्द्र श्लेष

ग़ज़ल

उर्मिला माधव

1.

आंसुओं के साथ मैने,ज़िंदग़ी गुज़ार दी,
वक़्त की बला उतारी,सोज़े-ए-ग़म पै वार दी,

बेबसी ऑ बेकसी में बेख़ुदी का आसरा,
जब हुई ज़ियादती तो मग्ज़ से उतार दी..

किसलिए क़ुबूल हों ये दह्र की नियामतें,
कहीं कोई ख़ुशी मिली तो हाथ से बुहार दी,

रास्ते बिखर गए तो होंठ अपने सीं लिए
पर तड़प के रूह ने सदा भी बार-बार दी

यूँ भी तो जिया है इसको बाज़ियों की शक्ल में,
ज़िंदग़ी जुआ लगी तो ज़िंदग़ी भी हार दी,

2

आपको आंखों की तुग़यानी नज़र आती है क्या?
बेवजह भी यूँ किसी की आंख भर आती है क्या?

हम तो हैं अनजान ये सब आप ही बतलाइये,
आह की तह में ख़ुशी की हद भी दर आती है क्या ?

मेरे सर की सरपरस्ती, सिर्फ़ रब करता है अब,
ग़ैर की ख़ातिर मुहब्बत चलके घर आती है क्या?

उसको अपने वक़्त से आना है वो पाबंद है,
उसको कितना भी पुकारें, मौत पर आती है क्या?

जब क़दम थक जाएंगे तो राह में पत्थर भी हैं,
कोई भी मंज़िल हो आख़िर पूछ कर आती है क्या ?

उर्मिला माधव, फरीदाबाद

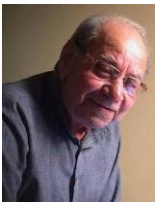

-कृष्ण बक्षी

रोशनी बेताब है

दर्द जब नागवार होता है
आदमी तार- तार होता है.

जो समझता बहाव पानी का
शख़्स बस वो ही पार होता है

आप पढ़िये,स्वयं में हर चेहरा
एकदम इश्तिहार होता है

आइना ख़ुद सलाम करता है
हुस्न जब होशियार होता है

प्यार का दर्द क्या कहे कोई
किस जगह बार-बार होता है

हमने देखा है, सूर्य के पहले
गहनतम अंधकार होता है

कोई दीपक जलाओ तुम

मैं वैसे ही परेशाँ हूँ न यों बातें बनाओ तुम
अंधेरा लग रहा तो फिर कोई दीपक जलाओ तुम

वही हड़ताल चक्का जाम सड़कों पर हैं हंगामें
किसी बेहतर हुए हालात की ख़बरें सुनाओ तुम

सफ़र लम्बा है रहजन भी तो ढेरों साथ चलते हैं
निकल ही जब पड़े हो सावधानी से तो जाओ तुम

किया था एक वादा तुमने जन्मों तक निभाने का
कहीं ऐसा न हो कि उस से पहले भूल जाओ तुम

मैं उलझन में हूँ काफ़ी देख कर हालात ताज़ा ये
कोई रस्ता निकलने का मुझे आके बताओ तुम

मुझे लगता नहीं कि तट तलक यों पहुँच पाओगे
यहाँ ठहरा हुआ पानी है मत कश्ती चलाओ तुम

हवा है तेज़ तो भाषा नदी ने भी बदल ली है
अगर लंगर गिराना तो संभल कर ही गिराओ तुम

-कृष्ण बक्षी

ग़ज़ल

अनीता सिंह

1.

अब्र चाहे, चांद उसकी ज़द में हो
दिन ये चाहे रात अपनी हद में हो

घर की छत से सर अगर टकराए तो
शख़्स को बेहतर है अपने क़द में हो

सोचिए ! कश्ती हो जर्जर , और वो
तेज़तर तूफ़ान की भी ज़द में हो

आदमी क्यूं ढल गया हैवान में
बात इस पर भी कभी संसद में हो

और कुछ भी तो नहीं फिर सूझता
शे'र कोई जिस घड़ी आमद में हो

2.

आप करते हैं बहाना नींद का
ख़्वाब से रिश्ता पुराना नींद का।

आप दिल देकर किसी को देखिये
ख़्वाब पलकों पर सजाना नींद का

दिल किसी का तोड़िये फिर देखिये
आपकी आँखों से जाना नींद का।

रहते मेहनतकश वहाँ देखा गया
टूटी खटिया पे भी आना नींद का।

है सुखी इंसान दुनियाँ में वही
जिसकी पलकों पर ठिकाना नींद का।

अनीता सिंह

बाल कविता

कुमार गौरव अजीतेन्द्र

चंदा मामा आओ जी

गोद में मुझे बिठाओ जी
चंदा मामा आओ जी
तारे क्या-क्या कहते हैं
बादल कैसे बहते हैं
मुझको तनिक बताओ जी
चंदा मामा...
दिन होते छुप जाते हो
रोज रात में आते हो
चक्कर क्या? समझाओ जी
चंदा मामा...
कब से है मेरा सपना
नभ से देखूंँ घर अपना
कभी मुझे ले जाओ जी
चंदा मामा...
खीर बनी मेवे वाली
भरी पूरियों से थाली
संग हमारे खाओ जी
चंदा मामा...

परी आयी

सोये बच्चों, झट उठ जाओ
बिस्तर छोड़ो, बाहर आओ
नभ से परी उतर के आयी
देखो संग वह क्या-क्या लायी
सोने जैसे पंख निराले
हाथों जादू छड़ी सम्हाले
रंग-बिरंगा पहने चोला
गोरा तन, मुखड़ा है भोला
गले जादुई लॉकेट जगमग
खुशियाँ बिखराती है पग-पग
चलो माँग लो उससे जी भर
चूक न जाना मौका सुंदर

==========

रचनाकार - कुमार गौरव अजीतेन्द्र
शाहपुर, दानापुर (कैन्ट)
पटना (बिहार)

राजेन्द्र श्रीवास्तव

आँखें

ईश्वर ने दी हैं दो आँखें
सोचो क्यों दी हैं ये आँखें
जीवन अंधकार मय होता
अगर नहीं होती ये आँखें।
ये प्रकाश का ज्ञान करातीं
रंगों की पहिचान करातीं
कौन,कहाँ कितनी दूरी पर?
यह अभिज्ञान करातीं आँखें।
कम प्रकाश में पढ़ना छोड़ें
टी.वी.नाता न जोड़ें
धूल,धुआँ व तेज धूप से
दृष्टिहीन हो जाती आँखें।
अरुणोदय की अरुण रश्मियाँ
गाजर,पालक हरी सब्जियाँ
इन सब के नियमित सेवन से-
तेज युक्त हो जाती आँखें।
दृष्टिहीन कुछ मित्र हमारे
उनके जीवन में अंधियारे
इस जग से जाने से पहिले
उनको दान करें हम आँखें।

किताबें

मेरी अच्छी मित्र किताबें
सीधी-सच्ची मित्र किताबें
कुछ छोटी कुछ मोटी-मोटी
सार्थक ,और सचित्र किताबें।
कृषि ,खेल विज्ञान की बातें
जल थल आसमान की बातें
अंतरिक्ष -अभियान की बातें
कितनी चित्र-विचित्र किताबें।
बुरा-भला का ज्ञान करातीं
धर्म और ईमान सिखातीं
मानवता का पाठ पढ़ातीं
गढ़ती सहज चरित्र किताबें।
जितना समय इन्हें हम देंगे
नयी-नयी बातें सीखेंगे
इनका आदर करना सीखें
पावन परम पवित्र किताबें।

राजेन्द्र श्रीवास्तव

कहानी

✡जुगनी ✡

मुकेश दुबे

यूँ तो उस शख्स का घर ही अजायबघर से कम न था क्योंकि वो खुद भी बहुत अजीब था।

दीवारों पर पेंटिंग्स और कबर्ड या छोटे स्टूलों पर पेड़ की शाख या जड़ों को तराशकर बनाई अद्भुत आकृतियाँ... सूखे फूल-पत्ते और मिट्टी या लकड़ी से बने पुतले।

एक स्केच नुमा पोर्ट्रेट सबसे अलग था।

चेहरे के गठन और हावभाव से कोई आदिवासी लड़की लगती थी। मगर यहाँ किसलिए है यह राज ही था शुभ्रा के लिए।

दो साल से जानती है वो शांतनु को मगर लगता है कुछ भी नहीं जानती उसके बारे में।

आर्ट्स कॉलेज में प्रोफेसर है और अच्छा इंसान है। ख़ामोश रहे तब भी उसकी मुस्कुराहट बात करती है।

जब भी उस पेंटिंग के बारे में बात करनी चाही शुभ्रा ने, शांतनु ने उसे ग्लोब सा घुमाकर छोड़ दिया है और वो दोनों ध्रुवों के बीच घूमती रह गई है।

यह तय था कि इस तस्वीर के पीछे कुछ कहानी है। जब भी निगाहें उठती हैं शांतनु की इसको देखकर, उसकी आँखों में इक तूफान नज़र आता है या मीलों फैली रेत पर कुछ निशान दिखते हैं.... ज्यादा कुछ देखने के पहले पलकें झपकाकर वो हँस पड़ता है।

'यार तुम सारी लड़कियों का दिमाग इतना तंग क्यों होता है ? हर बात को ज़िन्दगी से जोड़कर देखती हो... सिम्पल सी एक पेंटिंग है बस। अच्छी लगती है।'

मि. शांतनु। आप वाकई में अच्छे टीचर हैं। बच्चे आपकी हर बात को मानते हैं। मैं कोई स्टूडेंट नहीं हूँ और समझती हूँ आपकी बात को।

इतनी पेंटिंग्स में सिर्फ़ यही क्यों है इस जगह पर ? आपकी स्टडी टेबल के ठीक सामने।

आ गई न वही टिपीकल लेडी एप्टीटयूड पर... अब है तो है। हर बात की वजह नहीं होती।

देखो शांतनु इस तस्वीर में कुछ खास है। मैं जानती हूँ और जब तक तुम नहीं बतलाते इसके बारे में, मेरा सवाल खत्म नहीं होगा।

क्या और क्यों जानना चाहती हो ?

कौन है यह और कहाँ है ? तुमसे क्या रिश्ता है इसका...

जुगनी है यह। कांकेर एक जगह है छत्तीसगढ़ में। वहीं जंगल में रहती थी।

मुझसे मिली थी तब कोई 14 साल की रही होगी।

उस वक्त मैं वाइल्ड लाइफ व बर्ड्स फोटोग्राफी करता था। एक प्रोजेक्ट के सिलसिले में गया था वहाँ।

महुए के फूल व फल से लदे पेड़ों की तस्वीर के साथ यह भी कैद हो गई थी।

बड़ी चंचल थी। गाती बहुत मीठा थी बिल्कुल महुए की तरह।

वैसे मेरी पहचान की वजह दूसरी थी।

इस लड़की ने ठेकेदार की नाइंसाफी को बर्दाश्त नहीं किया था।

अपने वाजिब हक के लिए उठ खड़ी हुई थी और उस वन ग्राम के लोगों को भी अपने साथ कर लिया था।

जंगलों में कानून भी जंगल का ही चलता है। आदमी वहाँ जानवर से भी हिंसक और क्रूर हो जाता है।

कुदरत की देन पर सिर्फ़ अपना अधिकार समझता है और बेशर्मी से लूटता है उस नैसर्गिक उपहार को।

भोले भाले आदिवासी उसकी नीयत की खोट को नहीं समझ पाते और अपने हिस्से की उपज के साथ मासूम लड़कियाँ भी छली जाती हैं।

जुगनी ने अपने जिस्म के साथ जंगल की दूसरी उपज को बांटने से मना कर दिया था। बस यही कसूर था इस लड़की का।

जब अपने लोगों की नज़रों में भी गलत ठहराई जाने लगी तब आई थी मेरे पास।

ठेकेदार ने अपने संसाधनों की आड़ में कुछ लोगों को लालच देकर साध लिया था। वही लोग जुगनी के खिलाफ़ भड़का रहे थे दूसरों को।

लोग अंधे हो गये थे चंद रुपयों की खातिर। ठेकेदार का चश्मा ऐसा चढ़ा था उनकी आँखों पर कि उन्हें सही व गलत का फर्क दिखना बंद हो गया था।

जुगनी उनके हक के लिए आवाज़ उठाकर उनकी ही दुश्मन बन गई थी।

वो चाहती थी मैं लोगों से बात करूँ। असलियत क्या है उनको बताऊँ।

कोशिश की थी मैंने। वही हुआ जिसका डर था मुझे। ठेकेदार के इशारे पर जुगनी का मेरे साथ रिश्ता जोड़ दिया गया।

जुगनी के घरवालों को बहका दिया कि जुगनी हर रात मेरे साथ रहती है और मैं ही उसे यह पट्टी पढ़ा रहा हूँ।

उस रात वो भागती हुई आई थी मुझसे कहने कि साब... चले जाओ इस जगह से। आपकी जान को खतरा है।

हालात बदल से बदतर हो रहे थे। मैंने पुलिस की मदद लेनी चाही मगर ऐसा नहीं हो सका।

पुलिसवालों ने आकर मुझे वहाँ से निकाल बाहर किया। मुझे उस इलाके में न आने की शर्त पर छोड़ा और मैं मजबूर हो गया।

मैंने बिलासपुर आकर लोगों से मदद चाही।

कोई सामाजिक संगठन या प्रशासन तैयार नहीं हुआ।

यह उन आदिवासियों का अन्दरूनी मामला है हर कोई यही कह रहा था।

मुझे फिक्र उस मासूम जुगनी की थी। पता नहीं क्या होगा उसके साथ।

बड़ी मुश्किल से एक पत्रकार मेरी मदद के लिए तैयार हुआ। दस दिनों में उस जगह पर बिल्कुल अमन चैन आ गया था। ठेकेदार वापस बस्ती के लोगों के साथ काम कर रहा था।

लोगों को कच्ची शराब की जगह अंग्रेजी मिल रही थी पीने के लिए।

अगर कोई नहीं था वहाँ, बस वो जुगनी थी। कोई भी नहीं बता रहा था उसके बारे में। ठेकेदार कुत्सित हँसी हँस रहा था। शहरी बाबू कहाँ बेच आये हो जुगनी को। पहले उस बेवकूफ़ लड़की को जाल में फंसा कर खेलते रहे उसकी जवानी से। जब जी भर गया तब उसे बिठा आये हो मंडी में और फिर आये हो नई चिड़िया के शिकार के लिए....

सच मैं देख रहा था केवल वहाँ। जुगनी का नाम मेरे नाम के साथ जुड़ गया था।

उस बेचारी का क्या किया गया है मैं समझ रहा था।

लौट आया था अपनी जुगनी को साथ लिए यादों में और इस तस्वीर के रूप में।

और क्या जानना चाहती हो तुम ? आज पूछ लो हर बात। इसके बाद अब कभी जिक्र नहीं करना जुगनी का।

शुभ्रा बस देख रही थी शांतनु की आँखों में दहकते हुए जंगल को.....जुगनी को।

©मुकेश दुबे

कहानी

मुआवजा

(कहानी संग्रह अकाल बड़ी या भैंस से)

गोकुल सोनी

एक हफ्ता हो गया, पानी था कि रुकने का नाम ही नहीं ले रहा था.सुखिया कच्चे घर में जगह-जगह गिरती पानी की धारों को बाहर उलीचते-उलीचते परेशान थी. उसपर चार दिन से गंगू का बुखार उतरने का नाम ही नहीं ले रहा था. बूढ़ी सास अलग खटिया पर सिकुड़ी-सिमटी पड़ी घुटने के दर्द से कराह रही थी. ऐसी परेशानी में भी सुखिया को ये सोचकर हँसी आ गयी, कि रामजी की माया तो देखो, पिछले साल इसी महीने में बिलकुल पानी न गिरने से त्राहि-त्राहि मची थी,और उसने मेढक और मेंढकी की शादी कराकर इन्द्र देवता से पानी गिराने के लिए प्रार्थना की थी ; और इस साल देखो, दो बार माता रानी को गुड़ और चने का भोग लगा चुकी है, कि माता-पानी रोक दो, फिर भी पानी नहीं थम रहा. उसको ये भी याद आया कि पिछले साल स्कूल की बड़ी मैडम कह रहीं थी कि आदमियों ने पेड़ और जंगल नष्ट कर दिए हैं, इससे पानी कम बरस रहा है, पर उसकी समझ में ये बात नहीं आ रही थी कि इस साल एकाएक इतने पेड़ कैसे उग आये कि बारिश रुकने का नाम नहीं ले रही. उसने सोचा पानी रुकने दो, वो आँगन के कनेर के पेड़ को जरूर काट डालेगी ताकि अगले साल इतना पानी न गिरे.

गंगू के कराहने की आवाज से उसका ध्यान भंग हुआ. सुबह से उसने कुछ नहीं खाया था. सुखिया ने उसे बड़े प्रेम और आग्रह से उसे दो रोटी मूंग की दाल के साथ खिलाई, और सरकारी अस्पताल से मिली दवाई की आख़िरी बची खुराक खिलाकर बड़ी ममता से

गंगू के सिर पर हाथ फेरा. विद्वानों ने सच ही कहा है कि पत्नि के भी कई रूप होते हैं, जहां सेवा करने में वह आदर्श परिचारिका होती है, वहीं भोजन कराते समय साक्षात "अन्नपूर्णा माँ" बन जाती है.

अच्छी बात यह रही कि शाम तक पानी रुक गया.उसने सोचा कि यदि रात भर पानी रुका रहा तो उम्मीद है कि नदी का पानी भी उतर जाए, और वह पास के शहर में गंगू को ले जाकर सरकारी अस्पताल में इलाज करा पायेगी. सुबह चमकती धूप को देखकर सुखिया ने कहा- माता रानी आपकी जय हो, आपने मुझ गरीब के गुड-चने का मान रख लिया. उसने जल्दी-जल्दी अपने, सासू माँ के और गंगू के कपड़े झोले में रखे और पडोस के लालाजी के ट्रेक्टर की ट्राली में बैठकर, सासू माँ और गंगू को लेकर शहर चली गई.

डाक्टरों ने गंगू को गंभीर न्युमोनिया बताया और तेज बुखार देखते हुए अस्पताल में भरती कर लिया, पर भाग्य का लिखा कौन टाल सकता है.दो दिन के अथक परिश्रम के बाद भी गंगू चल बसा. सुखिया पर तो मानो पहाड़ टूट पडा. वह पछाड़ खाकर गिर पड़ी. सुखिया की सास भी दहाड़ मारकर रो रही थी, आखिर जवान बेटा जो मरा था.डाक्टर ने सुखिया को समझाया कि जो होना था सो हो गया. अब तो तुम खुद को और ख़ास तौर पर अपनी बूढ़ी सास को सम्हालो. सास की ख़राब हालत देखकर सुखिया रोना भूल गयी, कहीं सासू माँ को कुछ हो गया तो वह अकेले क्या करेगी, इस बात का बोध होते ही वह सास को सम्हालने में लग गई. यह चिंता भी उसे सताने लगी कि रूपये तो इलाज में खर्चा हो गये, गाँव तक गंगू को कैसे ले जायेगी. और भी आगे गंगाजली, तेरहवीं का खर्च कहाँ से आएगा.

वार्ड बॉय ने आकर सूचना दी कि डिस्चार्ज पेपर बन गये हैं, डेड बॉडी ले जाओ. चिंता-ग्रस्त वह साधन की खोज में अस्पताल के बाहर गयी, कोई साधन उपलब्ध नहीं था. बड़ी मुस्किल से एक ऑटो वाला ५००/- रूपये में नदी तक ले जाने को तैयार हुआ. बोला-नदी से आगे तुम्हारे गाँव के रास्ते ख़राब हैं और चाह कर भी ऑटो वहाँ नहीं ले जा पायेगा. "मरती क्या न करती," नदी तक लेकर पहुंची ही थी कि बादल फिर गरजने लगे. ऑटो वाला फुर्ती से उनको व डेड बॉडी को उतरकर किराया लेकर, फौरन रफू-चक्कर हो गया. उसने सोचा नदी के रपटे पर पानी थोडा ही है. जाने की कोशिश कर ही रही थी कि एकाएक पानी का बहाव तेज हो गया. वह कुछ सोच पाती कि इतने में किनारे पर रखी गंगू की लाश पानी में बहने लगी. वह जोर-जोर से चिल्लाई, बचाओ-

बचाओ, मेरे पति पानी में बह गए हैं. पांच मिनट तक चिल्लाते-चिल्लाते वह नदी के किनारे-किनारे चलने लगी. किस्मत से आवाज सुनकर फटाफट ४-५ एन,जी.ओ. वाले जो बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए निकले थे वे आ गये. कूद गये पानी में और खतरा उठाकर भी गंगू को खींच लाये. उन्होंने गंगू को देखा तो उसकी सांसें बंद थी, बोले माफ़ करना बहिन जी हम आपके पति के प्राण नहीं बचा पाए. आप मत रो, बाढ़ से बहुत जनहानि हुई है आस-पास.अब जो हो गया सो हो गया आप लोग रो मत. धीरज रखो, होनी को कौन टाल सकता है. सरकार बाढ़ से हुई मौत के लिए परिजनों को पांच-पांच लाख दे रही है, वो आपको जल्दी दिलवा देंगे. सुखिया बोलने ही वाली थी कि उसके पति की मौत तो, कि उसकी सास ने उसका हाँथ दबा दिया और इशारे से उसे बोलने से रोक दिया. और रोकर बोली कि बेटा हमारा तो एक मात्र सहारा यही था. कहकर इतने जोर से रोई कि अस्पताल में भी नहीं रोई थी. तहसीलदार और शासकीय अमला भी आ चुका था. कुछ फोटो वगैरह खींचे गये, डाक्टर की रिपोर्ट भी बनी, फिर उनको सहारा देकर सरकारी गाडी से गाँव पहुंचाया गया.

उनकी दयनीय स्थिति और रोना पीटना देखकर एन.जी.ओ. वालों ने विशेष प्रयास करके मुआवजे की रकम ८-१० दिन में ही दिला दी.

क्रियाकर्म, गंगाजली व तेरहवी सभी कार्य सुचारू रूप से निबट गये. रुपयों का अभाव न रहा. दरिद्रता जा चुकी थी. दो दिन बाद फिर सुखिया माता रानी को पेड़े का भोग लगा रही थी. हे माँ- आपकी लीला अपरम्पार है. मेरा प्यारा गंगू चला गया इसका अफ़सोस मुझे जीवन भर रहेगा,मैं विधवा हो गई,पर इतना पुण्यात्मा था कि जाते-जाते हमारी जीवन भर की गरीबी दूर कर गया. यह भी समझ में नहीं आ रहा कि गरीब-गरीब की मौतों में भी फर्क होता है. अस्पताल में मरे तो कुछ नहीं, बाढ़ में मरे तो पांच लाख. सरकार भी कम चमत्कारी नहीं है.

गोकुल सोनी

कहानी

अस्तित्व रक्षा का पहला पाठ

पिंकी परुथी "अनामिका"

स्कूल से फोन आया, आयूषी की मम्मी बोल रही हैं ना,

हां जी

आप स्कूल आकर आयूषी को ले जाइए, आज आटो रिक्शा वाला नहीं आएगा।

जी, अभी आती हूं।

रमा फटाफट तैयार होकर , स्कूटी से बिटिया को लेने चली गई। घर पर एक छोटा बच्चा दो साल का था, सो पास वाली आंटी जी को अपने घर थोड़ी देर के लिए बुलाकर , छोड़कर गई। आयूषी स्कूल के बाहर ही खड़ी थी।

घर आकर रमा ने बिटिया से पूछा कि आज अंकल जी क्यों नहीं आए?

आयूषी बोली, मां वो लता दीदी हैं ना 9 th क्लास वाली , जो मुझसे पहले आटो में बैठकर आती हैं, पता नहीं क्यों, उनके मम्मी-पापा स्कूल आए थे , और रो रहे थे।

अब रमा को थोड़ी बैचेनी हुई, पहले आयूषी को खाना खिलाकर सुलाया , फिर एक सहेली के घर फोन लगाया जो लता के घर के पास रहती थी। तब पता चला कि आटो वाले ने कल सब बच्चों को छोड़ने के बाद जब लास्ट में लता को सुनसान जगह ले जाकर छेड़छाड़ की। वह बहुत चिल्लाई और माराकूटी भी की , लेकिन वह कमजोर पड़ गई और बेचारी.....

रमा को बहुत गुस्सा आया , और लता के लिए बहुत दर्द।

आज रमा ने सोच लिया था कि वह आयूषी को कुछ समझाएगी, भले ही वह छः साल की है तो भी।

आयूषी सोकर उठी, मां दूध लेकर आई और उठाकर गोदी में बिठाया बिटिया को और बोली

आयूषी तुमको गुडटच और बेडटच पता है क्या?

नहीं मम्मा , वो क्या होता है?

चलो दूध पीते जाओ , मैं समझाती हूं।
बेटा, गुडटच यानी कोई आपको हग करे या गोदी में बैठाए या प्यार करे और आपको अच्छा लगे ।
और बेडटच यानी कोई छूए या प्यार करे और आपको अच्छा नहीं लगे।
मम्मा वो कैसे समझ आएगा?
बेटा, जैसे मम्मी पापा, दादी दादा और छोटू आपको छूते हैं या प्यार करते हैं तो आप खुश होते हो ना , माने आपको कुछ भी गंदा नहीं लगता है ना, बस वो ही।
इनके अलावा भी यदि चाचा, चाची, मामा, मामी, बुआ, अंकल यदि गोदी में उठाते हैं तो आपको लगता है कि ये सब कितने अच्छे हैं, मुझे कितना प्यार करते हैं, तब तो सब ठीक है और इनमें से भी कोई या कोई और आपको प्यार करता है और आपको बुरा लगे ना तो वह बेडटच होगा।
मम्मा सिर्फ बुरा लगे तो बेडटच समझूं क्या?
नहीं बेटा, वो यदि आपके प्राइवेट पार्ट्स को छुता है , तो भी बेडटच होगा।
मम्मा प्राइवेट पार्ट्स किसे कहते हैं?
जो कपड़े हम सबके सामने पहन कर आते हैं तो हम बाडी को कवर रखते हैं, तो जो पार्ट्स नहीं दिखाई देते हैं वो प्राइवेट पार्ट्स होते हैं।
ओ के मम्मा, अब समझ आ गया। पर मम्मा जब मुझे बेडटच फील हो तो मैं क्या करूं?
बेटा, बेडटच फील हो तो जोर से गुस्सा करो उनपर, दांत से काट लो, और वो नहीं माने तो चिल्लाओ ताकि कोई आपके पास आ सके। कभी किसी के साथ अकेले नही। जाओ, सिर्फ मम्मी पापा, दादी और दादा के साथ ही बाहर जाओ । मम्मी पापा को स्कूल की, बाहर की हर बात बताओ
ओ के मम्मा। मम्मा बेडटच करने वाले को सजा नहीं मिलती क्या?
ये ही तो प्राब्लम है बेटा, वो हमारे बीच ही बड़े आराम से रहता है और हमें ख़बर तक नहीं होती। पर हां आप यदि जूडो कराटे सीख लो तो खुद ही सजा दे सकते हो।
आयूषी जोर से हंसने लगी, हां मां मैं जरूर जूडो कराटे सीखूंगी और सजा भी दूंगी।
मां अब खेलने जाऊं??
हां बेटा बिल्कुल, मगर टाइम से वापस आ जाना , होमवर्क भी करना है।
रमा ने *अस्तित्व रक्षा* का पहला पाठ सिखाया और लम्बी सांस ली।
****

पिंकी परुथी "अनामिका"

लघुकथा

अंतर

कविता वर्मा

भैया चाय अभी बना दूं या आप बनाकर पी लेंगे मुझे किटी पार्टी में जाना है।" सुनंदा ने अपने देवर से पूछा जो दो दिन की छुट्टी में हॉस्टल से घर आया था।

"क्या भाभी आप भी पढी लिखी हो कर मूढमगज अमीर औरतों की तरह किटी पार्टी में जाती हैं। कुछ सार्थक किया करिये किटी में होता क्या है इसकी उसकी सास ननद और कामवालियों की बातों के अलावा।"

बात तो चुभने वाली थी लेकिन किटी में जाने से पहले और दोदिन के लिए घर आये देवर से कोई कड़ी बात कहने से सुनंदा बचना चाहती थी।

उसे चुप देख कर अमित को बल मिला "भाभी किटी में औरतें अपने गहने कपड़ों की नुमाइश ही तो करती हैं और खाना-पीना। आप पढी लिखी हैं आपको यह सब करने का मन कैसे होता है?"

"भैया कल रात आप बहुत देर से आये थे कहां रह गये थे?" सुनंदा ने बात बदलते हुए कहा।

"भाभी कल हम कॉलेज के दोस्तों ने मिलने का प्रोग्राम बनाया था हम सब एक रेस्तरां में मिले कौन कहां है क्या कर रहा है सबकी जानकारी लेते देते रहे। अब सभी बिजी हैं बार बार मिलना तो होता नहीं है। बस देर तक गप्पे होती रहीं।"

"अरे मुझे लगा किसी का बर्थडे था आप नये कपड़े पहन कर गये थे।"

"अरे वो तो बस ऐसे ही थोड़ी झांकी भी तो जमाना पडती है।"

"आपका वो एक दोस्त था धीरज वो भी आया था?"

"नहीं भाभी वो तो मुंबई में है वो नहीं आया लेकिन कल सुना वह किसी के साथ लिव इन में है मजे कर रहा है। कल बहुत मजे लिये उसके।"

"कुछ खाया पिया भी या बस बातों से ही पेट भर लिया?"

"अरे भाभी गप्पों के साथ तो भूख ज्यादा ही लगती है हमने भी खूब खाया।"

सुनकर सुनंदा के चेहरे पर मुस्कुराहट आ गई जिसे देखकर अमित अचकचा गया वह यह तो समझ गया कि भाभी की बातों का कोई मतलब है लेकिन क्या एकदम से समझ नहीं पाया। उसके चेहरे पर उलझन देख सुनंदा धीरे से बोली "बस आपकी मीटिंग मिलना जुलना एक-दूसरे के बारे में बातें खाना पीना किटी नहीं कहलाता।"

कविता वर्मा

लघुकथा

"आखिरी गौरैया'

प्रदीप अरोरा

"बस अम्मा ये आखिरी गौरैया । अम्मा आज के बाद जिद नहीं करूँगा।" 12 वर्षीय हामिद अपने हाथ में गुलेल लेकर मचल रहा था।

"देख बेटा, आज तेरे मामू आ रहे हैं, अब्बू ने पूरे 850 का मुर्गा खरीदा है ।" माँ ने समझाना चाहा, लेकिन हामिद नहीं माना।

मकान से लगभग 30 फीट दूर पीपल के पेड़ पर गौरैया का एक घोसला था। हामिद छत की मुंडेर पर चढ़ा और गौरैया का इन्तजार करने लगा। जैसे ही गौरैया आई, उसे देख घोसले के बच्चे अपनी चोंच खोलकर 'चीं-चीं-चीं-चीं' करने लगे । हामिद ने मुंडेर पर आहिस्ता से एक कदम आगे बढ़ाया और गुलेल तान दी । निशाना अचूक था । गौरैया 'टप' से नीचे आ गिरी, उधर 'धड़ाम' की तेज आवाज के साथ हामिद ।

आंगन के दहाड़मार रुदन के मुकाबले घोसले की चिंचिंयाती गूंज अधिक तेज सुनाई दे रही थी ।

प्रदीप अरोरा
झाबुआ (म.प्र.)

लघुकथा

विष-वास ?

संजीव आहूजा

'नहीं नहीं संजय ऐसा नहीं कर सकता, १० साल से साथ है ' यकीन ही नहीं हो रहा था । संजय को हरदम बेटे सा ही समझा, वो भी बहुत इज्जत करता है |

'आज कल कोई भी इतने विश्वास के काबिल नहीं होता, आप उस पर पूरी दुकान छोड़ देते हैं, अब जमीन क्यों सरक रही है, अपनें ही कानों पर विश्वास नहीं रहा क्या ?' उसे लगा जैसे कोई कह रहा हो ।

अब राकेश को समझ आ रहा था, क्यों कुछ महीनों से उसका १४ साल का बेटा, 'मन', थोड़ा अनमना सा रहने लगा था | जेब खर्च भी कुछ ज्यादा ही माँगने लगा था, न दो तो गुस्सा | तीन बेटियों के बाद एक बेटा, सभी का दुलारा |

सुबह उसकी पैंट की जेब से एक पुड़िया मिली, जिसमें कुछ नमक सा पाउडर था । राधा ने उसे दिखाया, राकेश ने सोचा मुँगफली खाई होगी, नमक की पुड़िया जेब में रह गयी होगी, कूड़ेदान में फेक दी | पर हैरानी तब हुई जब, दोपहर में, खाना खानें दुकान से घर आया, तो राधा नें बताया, "मन बहुत बेचैनी से कुछ खोज रहा था, पैंट माँग रहा था, जो धुलने चली गयी थी |" तभी शक हो गया । बिना किसी से कुछ बोले, पुड़िया खोजकर निकाली, एक जानकार दोस्त को दिखाई, चख कर बोला, "यार ये तो 'ड्रग' है, तुझे कहाँ से मिली |" जमीन घिसक गयी, वापस आ दुकान में बैठ गया, क्या करूँ, क्या 'मन' ड्रगस् लेने लगा है ? क्यूँ ? कैसे ?

तभी संजय के मोबाइल की घंटी बजी, वो मोबाइल उठा कर पीछे गोदाम में चला गया । राकेश टायलेट जाने के लिये गोदाम के दरवाजे के सामनें से निकला, संजय की आवाज सुनाई दी । दबी जुबान में किसी से कह रहा था, "तुम बस समय से पुड़िया पहुँचा देना, यहाँ छोटे भईया एकदम मेरे कब्जे में हैं, पुड़िया नहीं मिले तो वो बेहाल, और अब हम होंगे मालामाल |"

हत्प्रभ सा राकेश सोचनें लगा, क्या सच में, आज के समय में, विश्वास का सही अर्थ, विष-वास है ?

~ संजीव आहूजा~

लघुकथा

'होश'

सीमा शिवहरे' सुमन'

"यार! थैंक गॉड !अच्छा हुआ तुम आ गईं ,कितनी देर कर दी ।सब इंतजाम हो चुका है। सुबह तक, हम हमारी सपनो की दुनिया में होंगे , वो गहने तो ले आई हो ना !भूली तो नहीं...अब कुछ बोलोगी भी ! क्या नींद में हो?"

"नहीं ! अभी-अभी तो जागी हूँ! सोई हुई तो अभी तक थी।नाहीं मैं गहने लाई हूँ ,और नाहीं तुम्हारे साथ भाग रही हूँ। मैं अपने सारे फोटो और प्यार की निशानियाँ मिटाने आई हूँ। "

"क्या? क्या, वकवास कर रही हो! एन वक्त पर,होश में तो हो!

"हाँ !मैं होश में आ चुकी हूँ। जानते हो मेरे झूँठ बोलकर गहने माँगने पर कि मेरी सहेली को इसी डिजाइन के गहने बनवाना है, माँ ने बिना कोई सवाल किये और बिना पापा से पूछे मुझे सारे कीमती जेवर थमा दिये ;सुबह मेरी जरा सी ऊँगली जल जाने पर ,पूरे दिन जलन मेरे मम्मी -पापा को होती रही । तो मुझ पर इतना भरोसा करने वालों का विश्वास कैसे तोड़ सकती हूँ , उन्हें पूरी जिन्दगी बदनामी की आग में जलता कैसे छोड़ सकती हूँ।और दुनियाँ में ऐसी कोई औलाद नहीं बनी, जो अपने माँ- बाप का दिल दुखा कर कभी खुश रह सकी हो।

सीमा शिवहरे' सुमन' भोपाल

अनुवाद

अनुयायी और मित्रों के विषय में

(फ्रांसिस बेकन के निबंध पर आधारित)

महंगे अनुयायी कभी पसंद नहीं किए जाएँगे , शायद ही कोई लंबी यात्रा के लिए कमजोर साधन लेकर चलना पसंद करे| यहाँ महंगे से मेरा आशय उनसे ही नहीं, जो जेब पर भारी पड़ते हों, वरन वे भी जो उबाऊ और जिद्दी होते हैं| सामान्य अनुयायियों को बेहतर स्थिति ,अभिव्यक्ति, सलाह और जुल्म से सुरक्षा के लिए आह्वान करना चाहिए | झगड़ालू अनुयायी प्रथम नापसंद होते हैं| सामान्यतः बड़े लोगो में आपसी गलतफहमी के और किसी और से नाराज होने के कारण, न कि व्यक्ति विशेष से प्रभावित होने के कारण वे अनुयायी से प्रतीत होते हैं|

वैसे ही यशस्वी अनुयायी, जो सब जगह यह ढ़ोल पीटते जाते हैं, कि उनके स्वामी उनकी कितनी प्रशंसा करते हैं, ये असुविधाजनक स्थिति निर्मित कर देते हैं, और ये एक व्यक्ति के यश को बाहर कर उसके लिए ईर्ष्या बढ़ा देते हैं| अनुयायियों की एक कोटि उन की भी है, जो गुप्तचर की तरह होते हैं, ये घर का भेद लेकर उसे दूसरे को उजागर कर देते हैं, ये अत्यंत खतरनाक होते हैं|

तथापि ऐसे लोग जो दूसरों के मामले में अकारण हस्तक्षेप करते हैं, और चौपाल में कहानियाँ बांटते है कई बार काफी पसंद किए जाते हैं| राज्य के कुछ लोग जिन्हें किसी बड़े आदमी ने स्वयं नियोजित किया है जैसा कि वह घोषित करते हैं, (जैसे की किसी युद्ध के लिए नामांकित सिपाही) भी अनुयायी की कोटी में आते हैं| किन्तु सबसे सम्मानजनक शिष्यत्व का प्रकार वह है, जो अनुकरणीय भी है, जो सभी प्रकार के व्यक्तियों में सद्गुण और खूबियाँ देख सकता है| एक शब्द में वह गुणग्राही होता

है| यदि पर्याप्त मात्रा में सुप्रसिद्ध अवसर उपलब्द्ध न हों, तो ज्यादा योग्य के बजाय कामचलाऊ को ग्रहण कर लेना चाहिए|

सच बात तो यह है, कि बुरे वक्त में प्रतिष्ठित व्यक्ति से सक्रिय व्यक्ति अधिक उपयोगी है| यह सही है कि प्रशासन में एक से पद के लोगों को एक जैसे काम पर लगाना चाहिए, क्योंकि किसी पर असाधारण अनुग्रह करने से वह तो अवज्ञाकारी हो जाता है, किन्तु शेष लोग भी असंतुष्ट हो जाएँगे, कारण की वे भी विशेष लाभ के लिए दावा कर सकते हैं|

इसके विपरीत लोगों का समुचित अंतर करते हुये चुनाव करना बेहतर रहता है| ऐसे में जिस व्यक्ति को प्राथमिकता दी जाती हैं, वह स्वयं को धन्य महसूस करता है, और बाकी सभी उस मौके को पाने के लिए आगे बढ़ना चाहते हैं, और सब कुछ आपके अनुकूल रहता है| पहली बार में ही किसी व्यक्ति को विशेष महत्व देना कदापि ठीक नहीं, क्योंकि फिर वह उस अनुपात में सदैव खरा नहीं उतर पाता|

किसी एक व्यक्ति के माध्यम से प्रशासन सुरक्षित नहीं , क्योंकि यह उस व्यक्ति के प्रति उदारता को प्रकट करता है, और उसमें स्वच्छंदता की संभावना बढ़ जाती है, जो अपने नियोजक को जो उसे तुरंत घुड़कने से बचता है, के लिए बदनामी और अपमान लाता है| वह अपने से बड़ों से दुस्साहस करते हुये बात कर उनके सम्मान को ठेस पहुंचाता है| किन्तु इसके विपरीत अनेकों के द्वारा भटकना तो बहुत ही बुरा है,क्योंकि यह तो व्यक्ति को प्रभावहीन कर देता है, और बार बार परिवर्तन उपहासास्पस्द भी हो जाता है|

विनोद जैन

लेख

आशुतोष राणा

•॥ एक पत्र बनारस से ॥•

सम्मानीय मित्रो,

सोशल मीडिया को हम आभासी दुनिया मान कर उसका उपहास करते हैं, हम यह भी कहते कि **Nothing is real here. People are fake.. So please do not take them seriously. Agreed.**

अब सवाल यह उठता है कि जब यहाँ सब कुछ फ़ेक है तो फिर सोशल मीडिया पर होने वाली अप्रिय घटनाओं से हम वास्तव में बुरी तरह प्रभावित क्यों हो जाते हैं ?

हम सोशल मीडिया पर मिलने वाले प्रेम और आदर को तो झूठा मान लेते हैं, किंतु यहाँ पैदा होने वाली दुश्मनी को जीवन की सच्चाई मानकर उसका निर्वाह जीवनपर्यंत क्यों करते हैं ?

क़ायदे से जब सोशल मीडिया पर मिलने वाले मान को हम Fake मानते हैं तो इस पर होने वाले अपमान को भी Fake ही माना जाना चाहिये ?

इस पर पनपने वाला प्रेम यदि झूठा है तो इस पर पैदा होने वाली नफ़रत भी झूठ की श्रेणी में रखी जानी चाहिये ?

इस पर होने वाली मित्रता यदि झूठी है, तो इस पर होने वाली शत्रुता भी झूठी होनी चाहिये ?

ऐसा क्यों है कि हमारे जीवन के जो अर्थपूर्ण भाव हैं उनसे तो हम प्रभावित नहीं होते, किंतु जो व्यर्थ के भाव हैं उन्हें अर्थपूर्ण मान कर हम बुरी तरह प्रभावित हो जाते हैं ?

सोशल मीडिया की सकारात्मकता से हम उतना प्रभावित नहीं होते जितना इसकी नकारात्मकता से प्रभावित हो जाते हैं।

कहीं ऐसा तो नहीं की मनुष्य की मूल प्रवृत्ति नकारात्मक ही हो ? इसके चलते हम 'असार' को

ही 'सार' समझ बैठे और **जो वेस्ट था वही हमारा टेस्ट हो गया हो ?**

ऐसा क्यों है की सोशल मीडिया पर दूसरों को तो हम तुरंत समझ जाते हैं, या समझने का दावा करते हैं, किंतु स्वयं को हम रत्ती भर भी नहीं समझ पाते ?

हम जीवन भर जोड़ने के भाव से प्रेरित होते हैं किंतु यहाँ हम घटाने की प्रक्रिया में लिप्त रहते हैं।

ऐसा क्यों है कि प्रत्येक व्यक्ति स्वयं के लिए, स्वयं के दृष्टिकोण के लिए तो आदर, मान, स्वीकार चाहता है, किंतु अन्य लोगों के दृष्टिकोण के प्रति अस्वीकार और अपमान के भाव से भरा होता है।

#ऐसा_क्यों_है ? जबकि हमारे जन्म के साथ ही हमें 'जैसा बोएँगे वैसा काटेंगे' के मंत्र को घुट्टी में पिलाया जाता है।

फिर हम किसी को अपमानित करके स्वयं के लिए मान का महल कैसे खड़ा कर सकते हैं ?

हम काँटों के बीज से फूलों की पैदावार कैसे प्राप्त कर सकते हैं ?

हम अपने इर्द गिर्द के माहौल को छोटा, नगण्य मानते हुए, स्वयं को बड़ा और गणमान्य कैसे सिद्ध कर सकते हैं ?

मनोवैज्ञानिक कहते हैं की जब हम ख़ुद के लिए अस्वीकार, अनादर, असहमति के तीव्र भाव से भरे होते हैं, तब हम संसार से स्वयं के लिए स्वीकार, आदर, और सहमति तीव्रता से चाहते हैं। उस समय हम ये भूल जाते हैं की जो हम स्वयं को नहीं दे सकते, उसे हम दूसरों को कैसे दे पाएँगे ?

और जब हम दूसरों को वो नहीं देंगे जो हम अपने लिए चाहते हैं तो दूसरे हमें वो क्यों देंगे ?

इसलिए जो माध्यम सोशल मीडिया के नाम विख्यात है, उस माध्यम पर हम अनजाने ही, ना चाहते हुए भी अनसोशल हो जाते हैं। और उसपर होने वाले तिरस्कार, अपमान, शत्रुता को सहज ही स्वीकार कर उससे प्रभावित हो जाते हैं, क्योंकि इन सभी नकारात्मक भावों से हम बेहद अंदर से जुड़े हुए होते हैं।

विचार का विषय यह है कि जब हम स्वयं से ही कटे हुए हैं तब हम संसार से कैसे जुड़ पाएँगे ?

संसार से जुड़ने की पहली और अंतिम शर्त होती है स्वयं से जुड़ना, क्योंकि स्वयं के प्रति मित्रता का भाव ही संसार में मित्रों और मित्रता के भाव को पैदा करता है।

स्वयं से जुड़ा हुआ व्यक्ति संसार से तो जुड़ता ही है, बल्कि वह समाज को टूटने से भी बचाता है।

कालजयी व्यक्तित्व हों या सभ्यताएँ वे इस सत्य को जानते हैं की किसी की अश्रेष्ठता पर स्वयं की श्रेष्ठता के महल खड़े नहीं होते।
वे जानते हैं कि अपने सम्पर्क में आने वाले को छोटा साबित करके वे कभी भी बड़े नहीं हो सकते। इसलिए वे अपने सम्पर्क में आने वाले हर व्यक्ति को छोटा नहीं बड़ा बनाने का उद्यम करते हैं, जिससे उनके सम्पर्क से हमारे अंदर छोटेपन का नहीं, हमें बड़े होने का, बड़प्पन का अहसास हो।
वे जानते हैं कि नकारात्मकता की चिंगारी से सकारात्मकता की अग्नि नहीं पैदा होती।

#हमारा_जीवन_आभास_से_नहीं_अहसास_चलता_है।
सोशल मीडिया आभासी दुनिया नहीं #अहसासों_की_दुनिया_है।

"हमारे वास्तविक जीवन के अहसासों का प्रतिबिम्ब सोशल मीडिया है, तो सोशल मीडिया के अहसासों का प्रतिबिम्ब हमारा वास्तविक जीवन।"

आइए अपने प्रतिबिम्ब को देखकर अपने बिम्ब में सुधार करें, बिम्ब के सुधरते ही प्रतिबिम्ब स्वमेव सुंदर हो जाएगा।

~आशुतोष राणा

ऐसी कृतियाँ अलख जगाने का काम करती है। : कान्ता रॉय

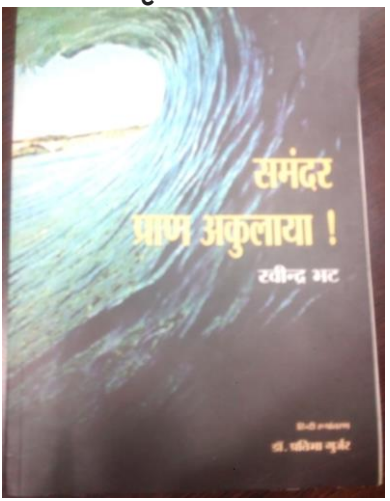

समंदर प्राण अकुलाया !: रविन्द्र भट्ट **पुस्तक समीक्षा: कान्ता रॉय**

हिन्दी अनुवाद: डॉ. प्रतिभा गुर्जर

प्रकाशन: स्वराज संस्थान संचालनालय, संस्कृति विभाग, मध्यप्रदेश शासन

समंदर प्राण अकुलाया ! रविन्द्र भट्ट की कृति में समंदर की अकुलाहट-सी तीव्र वेदना महसूस की जा सकती है।

वर्तमान समय में चारों तरफ जब माहौल दुषित होकर भ्रष्ट हो रहा है ऐसे वक्त में ऐसी कृतियाँ अलख जगाने का काम करती है। इस बात में जरा भी दो राय नहीं कि मराठी भाषा में लिखी गयी क्रांतिपर्व की इस गाथा का हिन्दी रूपान्तर कर डॉ. प्रतिभा गुर्जर ने हिन्दी साहित्य को समृद्धि दी है।

अनुभव और यथार्थ के धरातल पर रचि गयी यह उपन्यास विनायक दामोदर सावरकर के कवि मन संग्राम को चित्रित करता है। 14-15 साल के युवक का "भारत के स्वातंत्र्य के लिए मारते-मारते मरने तक जुझूँगा।" जैसी शपथ लेने को जिस सम्प्रेषनीयता से उभारा गया है, पढ़ते-ही हृदय में हुँकार भर देता है। अन्याय के विरूद्ध मन ललकार से भर जाता है। शब्दों में ऐसी क्षमता कि विचारों में फूँक डालने के काबिल कृति है।

यहाँ शब्द समिघा में उपन्यास के रचयिता रविन्द्र भट्ट वीर सावरकर जी द्वारा समाज-ऋण की बात करते हैं, समाज को लौटाने, देकर जाने की बात कहते हैं, कृति के लेखक रविन्द्र भट्ट को लगता है कि वीर सावरकर के चरित्र में समाज के लिए नव संचार का बीज निहित है इसलिये वह सब अर्थों से, सर्वांग से युक्त उस देशभक्त से सबकी पहचान करवाना चाहते थे।

आतंकवाद, अनाचार, आसक्ति, अभिलाषा, अमानुषिकता पर विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से वैचारिक क्राँति का अलख जगाना ही वीर सावरकर की गाथा सृजित है। नई पीढ़ी को प्रेरणा देना लेखन का उद्देश्य है क्योंकि रविन्द्र भट्ट संस्कारवान कवि हैं। अतः उन पर भी वीर सावरकर के संस्कारों की छाया रही होगी, ऐसा पुस्तक पढ़ते हुए प्रतीत हुआ है। परिस्कृत चेतना, धैर्य, वैज्ञानिक व युक्तिवादी चिंतन पुस्तक की आधारशिला है कृति इस बात को प्रमाणित करती है। इस उपन्यास की स्त्री पात्र चाहे आई हो, या येसूवहिनी या यमुना, सभी क्राँतिवीरों की पत्नियाँ संस्कार, साहस, बलिदान और धैर्य की प्रतिमूर्ती हैं। येसूवहिनी से हमउम्र होने की वजह से अंतरंग रिश्ते को भाभी रूपी माँ-बहन की समृद्ध ताना-बाना रचती है। यमुना का चिरप्रतिक्षारत तत्पर रहना, कालेपानी की सजा प्रसंग में खूब उभरकर आया है। वीर सावरकर के सम्मोहन को लिखते हुए वह ऐसा बिम्ब रचते हैं जैसे, "भावनाओं का ज्वार थमता नहीं, जन समुदाय को मंत्रमुग्ध करने वाली उनकी चेतनता से भरी आवाहन को सुनने के लिए भीड़ लग जाती थी।" पाठक मन पढ़ते हुए फ्रीज़ हो जाता है उस कालखंड में।

वा. रा. कान्त जी ने सही कहा है कि, "जब तक एक भी विरही जीव संसार में रहेगा तब तक यह काव्य जीवित रहेगा।" जैसा कि यह क्राँतिगाथा है, यहाँ देश की मिट्टी का महत्व सर्वोपरि है।

उपन्यास जेल की काली कोठरी से शुरू होती है जहाँ का विवरण हृदय विदारक है। आजन्म कारावास, कालापानी की सजा मानसिक विचलन का कारण बनता है। 1883 के इस काल में वीर सावरकर के धरती पर सुगबुगाते पैर पड़ने में क्रान्ति के स्वप्न का बीज निहित है।

कई एक जगहों जहाँ अण्णा, बाबा का जिक्र किया गया है संवेदनाओं का उद्दात रूप दृष्टिगोचर होता है।

आई के जाने का बिछोह इन शब्दों में तीव्र हो उठता है कि, " तीन दिन लगातार दिया जलता रहा पर अँधेरे की तीव्रता कम न हुई।" माता के बिछोह और मातृभूमि से सामीप्य को बेहतरीन तरीके से उभारा है।

शादी-व्याह के सहज मिठास लिए सामाजिक व्यवहार, संस्कार, उल्लास को भी आदर्श तरीके से रोपित किया गया है। पूणे, नासिक, भगुर की मिट्टी की केसरिया सुगंध पुस्तक के हर एक पंक्ति में सुगंधित है। लोकमान्य तिलक जी की गिरफ्तारी और फाँसी से पहले दामोदर पंत का तिलक जी से मिलने का प्रसंग वीर सावरकर के जीवन में नया संग्राम फूँक रहा था। चाफेकर बंधुओं का फाँसी पर झूलना कैशोर्य मन पर मनोवैज्ञानिक रूप से चिन्ह खींचता है जिसके फलस्वरूप वे रात भर जागकर अपने रोष के प्रतिफल में चाफेकर का फटका यानि गीत रच डालते हैं और यहीं पर वे पूजाघर में देवी के सामने अपने कैशोरावस्था में ही देवी माँ के सामने शपथ लेते हैं।

प्लेग का प्रकोप में ग्रामीण परिवेश , असहाय अवस्था में पिता, पितृतुल्य काका को खोना। पैतृक निवास का त्याग, परिवेश से बिछोह की पीड़ा और वीर सावरकर जी का कवि मन, भावनाओं को ऐसे बुना है लेखक ने कि पूरा कालखंड जीवित हो उठा। ऐसा सम्मोहन जोड़ा है लेखक ने कि पन्ने दर पन्ने पलटते हुए मानों निरन्तरता से उस युग को फिर से जी गए। यह वास्तव में वीरों का स्वर्णकाल था। पौरूष के महाकाव्य रचने का वह युग सावरकर को वीर सावरकर बना गया। बलिदान की कामना कर्म के फल की एकमात्र कामना थी।

तिलभांडेश्वर संग्रामिक उस पौध को पल्लवित होने का कारण बना। वीर सावरकर जी का लेखन और स्वतंत्रता के ध्येय को सिद्ध करने के लिए वृत्ति मिली। तिलक का तेज ध्येय को क्षितिज की ऊँचाई दे दी। क्राँतिगाथा पर्व पढ़ते हुए वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारतीय युवाओं में संघर्ष क्षमता जगाने व बढ़ाने का कारण बनेगी ऐसा प्रतीत हुआ है।

छात्रावास में रहते हुए 'सावरकर क्लब' के जरिए एक मंडल की स्थापना कर उसके द्वारा प्रत्यक्ष में स्वातंत्र्य कार्य का उद्घोष स्वतंत्र भारत माता लक्ष्य था। बिना संगठित हुए किसी भी लड़ाई को जीतना असम्भव है और वीर सावरकर जी इस तरह अपनी पूरी मंडली के साथ संगठित हुए। यहाँ पुणे की महत्ता चरितार्थ हो उठती है।

गणेश उत्सव हो या शिवजयंती, ऐसे सामाजिक पर्व को किस तरह देशभक्त जागरूकता से क्राँतिपर्व के लिए परिवर्तित करते रहें हैं इसका उल्लेख रविन्द्र भट्ट जी ने पूरी व्यवहारिकता से किया है। सावरकर क्लब की बैठकें, सम्मेलनों का सत्र, नाटकों की महत्ता, समस्त प्रभावी कल्पनाएँ जो जमीनी रूप से समाज में प्रचारक का काम किया को विस्तार पूर्वक बताया है। तानाजी मालुसरे जी की शौर्य गाथा सहित कई पात्रों से यह उपन्यास परिचित करवाती है।

'केसरी' और 'काल' के सानिध्य में स्वतंत्रता का आवाहन केन्द्र में था। अंततः राजसत्ता के खिलाफ विद्रोह करने के लिए मुख्य प्रेरणा आरोपी का कालेपानी की सजा मन में उद्वेग को प्रवाहित करती है

"स्वातंत्रयलक्ष्मी की जय! वन्दे मातरम!"

"दो भाई दो, इतना बड़ा देश होकर भी मेरा कहने की जहाँ चोरी है, वहाँ इतनी छोटी-छोटी चीजों पर मेरा अधिकार भला कैसे होगा? मैंने निर्विकार भाव से सरकारी सामग्री का माल स्वीकार किया पर इसके साथ मुझे एक हलाहल और पचाना था। कैदी क्रमांक और छूटने के दिनांक का बिल्ला मुझे हमेशा गले में पहनना था।" काली ध्वजा को पहनने की विवशता यहाँ मार्मिकता से पेश हुआ है। प्रतिज्ञा के प्रति समर्पण और हृदय की अटलता कृति के मूल में है।जीवटता की प्रतिमूर्ति को रविन्द्र भट्ट ने मानों अपनी कलम से साक्षात कर दिया है।

1910 से कालेपानी की उस सजा की शुरूआत का चित्र बड़ा ही दारूण है। सजा के बाद जेल में मिलने आई पत्नी के धीरज बँधाते शुष्क आँखों को पढ़कर बिना विचलित हुए वह कह उठते हैं कि, "यमुना, बच्चों की संख्या बढ़ाना, चार बाँस इकट्ठे कर घरौंदा बनाना, यदि इसे ही संसार

करना कहती तो ऐसा संसार कौए, चिड़िया भी करते हैं, पर संसार का इससे भव्यतर अर्थ होता है तो आदमी के रूप में हम संसार सजा कर कृतकृत्य हो गए।" वीर सावरकर में एक खास किस्म की संजीदगी उभरकर आती है।

अंडमान की पहली भयानक रात में मानस पटल पर 'कमला' की पंक्तियों को रचना, पढ़ते हुए पाठक-मन के बदन में भी फुरफुरी-सी जगा जाता है। कवि का हृदय कठोर अवस्था में भी कैसे कोमल भावों को जीता है, इसकी बानगी देखने को मिलता है वीर सावरकर की जीवनी में। संघर्षशील व्यक्ति जहाँ रहता है वहीं अपना नव स्थापना कर लेता है। कालेपानी की सजा भोगते कैदियों की दूर्व्यवस्था पर वहाँ भी संगठित कर कैदियों के साथ विद्रोह का स्वर मुखर करते हैं जिसके फलस्वरूप शिक्षा से महीने की छुट्टी संग अन्य सुविधाओं का लाभ मिलता है। पूरे उपन्यास में सम्प्रेषण का स्तर बेहतर है। इस पुस्तक का जन-जन में जाना जरूरी है, सरलता से वीर सावरकर के भव्य व्यक्तित्व को प्रभावशाली करता हुआ यह पुस्तक भारत की गौरवशाली गाथाओं में शुमार करने योग्य है।

कान्ता राय,
मकान नम्बर-21
सेक्टर-सी सुभाष कालोनी ,
नियर हाई टेंशन लाईन
गोविंदपूरा
भोपाल- 462023
फोन - 9575465147
ई-मेल- roy.kanta69@gmail.com

पुस्तक समीक्षा

" प्रतिभा प्रकट हुए बिना नहीं रहती "

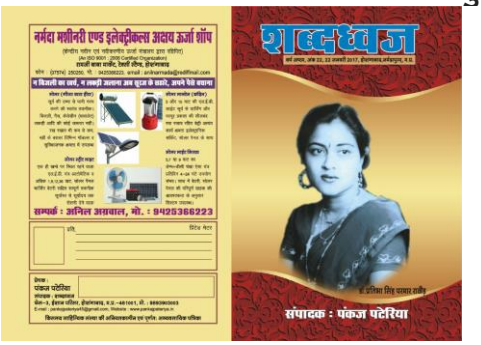

डॉ. प्रतिभा सिंह परसार राठौड़ **समीक्षक - देवेन्द्र सोनी, इटारसी**

की रचनाओं पर केन्द्रित पत्रिका - शब्दध्वज

सम्पादक -पंकज पटेरिया, होशंगाबाद

"प्रतिभा" किसी भी क्षेत्र में हो वह बिना प्रकट हुए नहीं रहती। बस उसे सही दिशा मिलना चाहिए। फिर यहाँ तो लेखिका का नाम ही प्रतिभा है। जाहिर है यह बर्हिमुखी ही होगी। अपने व्यक्तित्व को निखारने के लिए जिस तरह हम अच्छे-अच्छे परिधान, आभूषण धारण करते हैं उसी तरह अपने कृतित्व को निखारने के लिए अच्छे विचारों का भी होना जरूरी है। अच्छी अभिव्यक्ति चाहे बोल-चाल में हो या लेखन में हो, मन को महका देती है, अपना भी और- औरो का भी। यदि हमारे विचार सकारात्मक हुए तो यही लेखन पाठकों में ऊर्जा और प्रेरणा का संचार करता है लेकिन नकारात्मक विचार नैराश्य और अवसाद का कारण भी बनते हैं।

जब हम एक लेखक होते हैं तो हमको यह ध्यान में रखना चाहिए कि कहीं हमारे व्यक्तिगत विचार, सार्वजनिक होकर किसी का अहित तो नहीं कर रहे। यह एक बड़ी जिम्मेदारी होती है लेखक की, कि वह अपने लेखन से समाज को, राष्ट्र को सजग करते हुए सही दिशा का बोध कराये।

प्रतिभा जी के लेखन में मुझे यही दिखता है। उनकी रचनायें सशक्त है और चिंतन का दायरा भी बड़ा है। नई कवितायें, मुक्तक, गजल, 'सर्वभाव' लिए दिखते हैं। सरल, सहज भाव से उपजा उनका चिंतन यथार्थ पर टिकता है जो पाठकों को

प्रभावित किए बिना नहीं रहता। यही उनकी सबसे बड़ी विषेषता लगती है मुझे।

वीणा पाणि माँ सरस्वती की वंदना करते हुए वे अपनी आत्मा को सद्‌गुणों के ज्योर्तिमय प्रकाश से आलोकित करने की अभिलाषा रखती है। साथ ही प्राण के छूटने पर माँ के चरणों में ही समाहित होने की प्रार्थना, उन्हें सबसे अलग बना देती है। 'दे दे आशीर्वाद' रचना में प्रतिभा जी, अपनी कविताओं को मन के सागर की कश्ती बताती है। सच भी है विचारों का समुद्र बहुत गहरा है और लेखन को निरंतर आगे बढ़ाता है - कश्ती की तरह। झंझावात तो आऐंगे ही। सामाजिक विदरुपताओं पर भी आक्रोशित उनका मन तीखी मार करता है। समझदारी में वे बेटी को कोख में मार देने जैसे संकीर्ण विचारों को आड़े हाथ लेते हुए आधुनिक और रूढिवादी वर्ग पर सीधी चोट करती हैं। 'उलझन' में प्रतिभा जी तकनीक के दुरूपयोग पर भी मारक प्रहार करती है। ''माँ खुद नहीं सोती'' शीर्षक में लिखी कविता ने मन को झंकृत कर श्रद्‌धा और प्रेम से भर दिया। एक माँ का अपनी संतान के प्रति समर्पित पूरा जीवन और बाद में उपजे एकाकीपन का जिस सजीवता से इस कविता में चित्रण किया गया, वह किसी ग्रंथ से कम नहीं। माँ पर लिखा गया हर शब्द ग्रंथ ही तो होता है। यही भाव प्रतिभा जी की रचनाओं को यथार्थ बनाता है। भाषा का जिक्र करें तो हिन्दी और उर्दू पर उनका समान अधिकार दिखता है।

" प्यार आजकल रिवाज हो गया है। "

एक मुक्तक में वे साफ संदेश देती हैं कि

''जो प्यार देह की चाहत से शुरू होता है उसमें विश्वास की गुंजाईश नहीं रहती''

सच ही है यह इसे स्वीकार करते हुए प्रकट करना आसान नहीं।

सच की एक बानगी और देखिए-

'' याद रेत नहीं जो मुट्‌ठी में फिसल जाएगी।।

गड़ी रहती है यह दीवालों में कीलों की तरह।।"

क्या यह हकीकत नहीं?

बेटी हमेशा मेरी कमजोरी रही है पर यही बेटी जब बहू बनती है तो अपना सब कुछ समर्पित कर भी क्या वह बेटी रह पाती है अपने घर अंगना की?

कितना सरल, सहज और यथार्थ चित्रण करती हैं प्रतिभा जी यहाँ-

अधूरे अक्सर ख्वाब अपने छोड़ देती है,
ख्वाहिशों से भी रिश्ते सारे तोड़ लेती है,
होकर खुद फना, खुशियां औरों की ढूंढती है,
ससुराल में 'बेटी' जब नए नाते जोड़ लेती है ।"

प्रतिभा जी की इस अंक में प्रस्तुत सभी रचनायें, चाहे वे गजल हों, मुक्तक हों, या नई कवितायें, बहुत कुछ कहती हैं। इन रचनाओं में प्यार है, मनुहार है, रोमांच है, विरह है, तो रोमांस की बानगी भी देखने को मिलती है। एक ऐसा आकर्षण है इन रचनाओं में कि पढ़ने वाला किसी चुम्बक की भांति उनसे चिपका रहता है।

वे स्वयं अपनी रचनाओं के बारे में कहती हैं " गजब का नशा है जरा चखकर तो देखो"।

-देवेन्द्र सोनी, इटारसी।

साक्षात्कार

रीना पारीक (लेखिका)

प्रस्तुतकर्ता : वसुन्धरा राय

सोनी चैनल पर प्रसारित 'इतना करो ना मुझसे प्यार' ,
सोनी पल चैनल पर प्रसारित 'ये दिल सुन रहा है', 'प्यार को हो जाने दो' , 'मेरी आवाज़ सुनो' , 'एक विवाह ऐसा भी' , की स्वतंत्र डॉयलॉग राईटर ,
ज़ी टीवी पर प्रसारित 'जोधा अक़बर' , 'कुमकुमभाग्य' ,
सोनी पल चैनल पर प्रसारित 'ये दिल सुन रहा है' की एसोसिएट स्क्रीनप्ले राईटर ,
दूरदर्शन पर प्रसारित रंगोली की ऐंकर स्क्रिप्ट राईटर ,
टाटा स्काई के लिए कॉमेडी सीरीज़ जी जी पी जी का कुशल लेखन , डॉक्योमैंट्रीज़ लेखन तथा एवॉर्ड फंक्शन की स्क्रिप्ट व ऐंकर स्क्रिप्ट लेखन करने वाली बहुत कम उम्र में उपलब्धियां प्राप्त करने वाली राजस्थानी परंपरागतवादी परिवार की बेटी और मेरी बहुत घनिष्ठ मित्र रीना पारीक टेलीविजन इंडस्ट्री में आज एक जाना माना नाम है ।
आईये पत्रकारिता से जुड़े होने के बाद स्क्रिप्ट राईटर तक का सफल सफ़र उन्ही की ज़ुबानी .....

वसुंधरा - (मुस्कुराते हुए)

हैलो रीना कैसी हो ?

हँसते हुए

रीना - बहुत अच्छी हूँ ,आज आपके साथ हूँ तो और अच्छा फील कर रही हूँ।

वसुंधरा - (हंसते हुए)

अच्छा ये बताइये कभी सोचा था एक साथ काम करने वाली दो सहेलियां एक दूसरे के साथ ऐसे बात करेंगे ? कभी ऐसा ख्याल तक आया कि आप मुझे इंटरव्यू देंगी ?

रीना - नहीं ऐसा ख़्याल कभी नहीं आया था वसु कि आप मेरा इंटरव्यू लेंगी ,मुझे याद है कि हम एक साथ एक मैगज़ीन के लिए काम करते थे हमने काफी समय एक साथ गुज़ारा है ,आपका साथ हमेशा अच्छा अनुभव ही देकर गया है ।

वसुंधरा - चलिए शुरूआत आपके पारिवारिक पृष्ठभूमि से करते है , आप बेसिक कहां से हैं तथा आपके अलावा भी परिवार में किसी को लेखन में रूचि रही है ?

रीना- मैं बेसकली राजस्थान से हुं । मेरा बैकग्राऊंड बिजनेस परिवार से है ,मेरे पिता एक बिजनेसमैन हैं । लेखन के मामले में मुझे लगता है कि मुझमें मेरे परदादा जी (पिता के पिता) के गुण मुझे मिले वे काफी अच्छे छंदबद्ध व छंदमुक्त भजन, कविताएं लिखते थे ।

वसुंधरा - आपने लिखना कब शुरू किया , कोई ऐसी घटना ध्यान में आती है कि आपके भीतर ये फीलिंग आई हो कि लिखना चाहिए ?

रीना - दरसल मुझे पढ़ने का शुरू से ही बहुत शौक रहा है , मुझे याद है कि मेरे स्कूल में कविता लिखने का कॉम्पटीशन रखा गया था, जिसकी खास बात ये थी कि जिसकी कविता स्वरचित होगी तथा पसंद आने पर हिंदी विषय में पाँच नं एक्सट्रा मिलेगें तथा उस समय देश के जो हालात थे कुछ पंक्तियाँ कविता स्वरूप उभरीं । जब प्रथम पुरुस्कार मिला बस वहां से मुझे लिखने का शौक हुआ इस तरह इस इंसीडेनट ने मुझे आगे भी लिखते रहने के लिए प्रेरित किया।

वसुंधरा- लेखन क्षेत्र में आरंभ से अब तक का सफर कैसा लग रहा है ?

रीना- मेरा अब तक का सफर सच कहुं वसु बहुत ही अच्छा रहा है । पढाई के साथ कविताएं लिखती रही किंतु लेखन करते हुए इस मुकाम को पाऊंगी ऐसा कभी नहीं सोचा था ।

वसुंधरा -आप पत्रकारिता से जुड़ी हुई रही हैं फिर अचानक स्क्रिप्ट राईटिग से कैसे जुड़ीं ?

रीना- देखिये कई बार हम सोचते कुछ और हैं होता कुछ और है ऐसा ही मेरे साथ भी हुआ (हँसते हुए) एक्चुली मै आई.पी.एस. ऑफ़िसर बनना चाहती थी जैसे कि मैने बताया कि मै राजस्थान से हूँ वहीं से मेरी पढ़ाई चल रही थी लेकिन बिजनेस के कारण मेरा पूरा परिवार मुंबई आकर रहने लगा था , उसी दौरान मेरा ग्रैज्युएशन कम्पलीट हुआ और मैने पत्रकारिता मास्टर में एडमीशन ले लिया जब वो कम्पलीट हुआ तब मैं भी मुम्बई शिफ्ट हो गयी चूंकी मुझे एडवैंचरिंग, चैलेंजिंग वर्क पसंद था पत्रकारिता भी कुछ ऐसा ही चैलेजिंग भरा काम है । कोशिश करते करते स्व० बालासाहेब जी का दैनिक अखबार दोपहर का सामना में पत्रकार के हैसियत से जॉब किया । बस इस तरह से कई,..

मैगज़ीन , उसके बाद नवभारत टाईम्स में 5 साल तक जॉब किया लेकिन एक ही तरह का काम करते करते बोर हो गयी एक दिन अचानक ही डिसाईड किया कि अब नौकरी नहीं करनी है और नौकरी छोड़कर बड़ा रिस्क लेने के बाद थोड़े दिन आराम से समय निकाला ।

मेरा और एकता कपूर का एक कॉमन फ्रैंड है उन्होने मेरी एकता कपूर से मीटिंग करवाई तथा मीटिंग सफल रही एकता जी व निवेदिता जी जो बाला जी टेली फिल्म्स की 20 साल तक क्रियेटिव डाईरैक्टर रही इन दोनो ने मेरे करियर को एक नया आयाम दिया तथा इन दोनो से मुझे बहुत कुछ सीखने को भी मिला, आज एक स्क्रिप्ट राईटर की हैसियत से एकता कपूर के साथ उनके कई प्रोजैक्ट पर काम कर रही हुं ।

वसुंधरा -: पास्ट और प्रैजेंट की राईटिंग में आप कैसा अंतर महसूस करती हैं ?

रीना- देखिए समय और दर्शक हमेशा एक जैसे नहीं मिलते , मेरे कहने का मतलब है कि पहले की डॉयलौग हैवी ड्यूटी से भरे होते थे , भारी शब्दों का यूज़ अधिक था फॉर एक्ज़ांपल शोले मूवी उसके डॉयलॉग बहुत भारी शब्दो से भरे पड़े है वहीं आज की आप कोई भी मूवी देख लीजिए आम साधारण रोज़ मर्रा की भाषा का यूज़ ज्यादा है ।

वसुंधरा - पत्रकार और स्क्रिप्ट राईटर में कौन सी रीना आपको पसंद है ?

रीना -(हंसते हुए) वसु दिलचस्प सवाल है ये , क्या कहुं वैसे मुझे दोनो ही रीना पसंद हैं । मेरी नज़र में दोनो वर्क एक दूसरे से बिल्कुल अलग हैं पत्रकारिता डायनमिक जॉब है इस जॉब के कारण आप रोज़ अलग अलग लोगो से मिलते हैं सबके साथ रोज़

का उठना बैठना है और स्क्रिप्ट राईटिंग आपको लोगो से काफी हद तक अलग करता है स्क्रिप्ट राईटर कब अपनी ही दुनिया मे काल्पनिक करैक्टर्स के साथ अकेला हो जाता है पता ही नहीं चलता । सीन के हिसाब से सोचना पड़ता है कभी कभी सही लाईन्स के लिए घंटो देने पड़ते हैं , लेकिन मै पत्रकारिता से जुडी हुई रही हुं तो कम से कम मैं दोनो जगह फिट रह कर अपने काम को इंज्याय कर रही हूँ ।

वसुंधरा- आप अपनी लेखनी से समाज को जोड़ने में सफल महसूस करती हैं ? कोई ऐसा इंसीडेंट याद आता क्या है किसी ने कहा हो कि आपका इस डॉयलॉग ने या सीरियल ने मुझे पर बहुत ईम्प्रैस किया ।

रीना- हम कहते हैं ना कि सिनेमा समाज का आईना होता है। समाज और सिनेमा का आपसी कनैक्शन है ही इसको किसी भी हालत में नकारा नहीं जा सकता , मै स्क्रिप्ट राईटर हुं जब मेरे लिखे हुए किसी धारावाहिक को अच्छा रिस्पॉस मिलता है वो खुशी सच में बहुत अपनी सी ही होती है जैसे कि सोनी टीवी पर प्रसारित इतना ना करो मुझे प्यार की डॉयलॉग राईटर के तौर पर मेरी लेखनी को बहुत साराह गया ऐसे ही एन टीवी पर प्रसारित मेरी आवाज़ ही मेरी पहचान धारावाहिक के डॉयलॉग्स को क्रिटिक्स ने खूब पसंद किया निश्चित तौर पर खुद में अच्छा ही महसूस होता है । कई बार किसी प्रशंसक को कहीं से नं मिल जाता है तो वे भी फोन करके **बधाई** और प्रशंसा व कपने अनुभव सांझा करते है जिससे मुझे भी खुशी होती है ।

वसुंधरा - क्या आपका फिल्मों की तरफ भी रूझान है ,
बड़े पर्दे के लिए पटकथा या गीत लिखने का विचार है ?
भविष्य में आप स्वयं को कहां देखना चाहती हैं ?

रीना- निश्चित भविष्य में अगर ऐसा कोई मौका आया तो ज़रूर फिल्मों के लिए भी लिखुंगी , पत्रकारिता के समय मैंने बहुत फिल्मों की समीक्षा की है और बहुत सालो तक नवभारत टाईम्स से जुड़ी रही हुं व इसी फील्ड से जुड कर पत्रकारिता की है , हालांकि पटकथा लेखन एक अलग विधा है लेकिन डैफैनैटली अपॉर्चुनिटी मिली तो इस विधा पर भी स्वयं को आजमाऊंगी मैं ।
मैं अच्छी लेखिका के साथ साथ एक अच्छी इंसान के रूप में स्वयं को देखना चाहती । सफलता के शिखर पर रह कर वो सब दिखें जिनके सहयोग के बिना मैं कभी कुछ भी नहीं हो सकती ।

वसुंधरा- मै जानती हुं कि आप बहुत अच्छी कवियित्री भी हैं , कभी मंच कविता पाठ किया है ? यदि हां तो मंच का अनुभव कैसा रहा ?

रीना-हा हा हा हा (हंसते हुए) थैंक्यू वसु , कविताओं का तो शौक है और मेरा सौभाग्य कि बहुत बार मंचो पर भी कवितापाठ का मुझे मौका मिला है , अच्छा अनुभव रहा है सबसे अच्छी बात ये है कि आपकी लेखनी को लाईव दर्शक सुनते है अच्छा तो तालियां नही तो शांती रहती है ।

भविष्य में ऐसे लाईव रिस्पॉस को मिस नहीं करना चाहूंगी मैं।

वसुंधरा- आप स्वयं यूवा लेखिका हैं , उभरते हुए नये लेखको को क्या संदेश देना चाहेंगी ?

रीना - (गंभीरता से) आज का सच यही है कि हर फील्ड में कॉम्पटीशन है लेखन क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है , पहले गिने चुने नाम जिनको हम अपनी उंगलियो पर गिन सकते थे पर आज हर तीसरा ,चौथा व्यक्ति लिख रहा है तो नये उभरते लेखकों को मैं यही कहुंगी कि यदि लेखन क्षेत्र में ही काम करना है तो दृण रहें मेहनत करें संघर्ष होगा लेकिन डटे रहें कितनी भी रूकावटें क्यों ना आएं हुनर और लगन को कोई रोक नहीं सकता ।

वसुंधरा- थोड़ा व्यक्तिगत बात पर आती हुं (हंसते हुए)

आप अभी तक सिंगल हैं खूबसूरत हैं नॉलिजवल होशियार जागरूक महिला हैं जो अपने आप में यूनिक कॉबिनेशन है मिंगल होने का कब तक इरादा है और भावी जीवनसाथी में क्या ऐसा होना चाहिए कि हां लगे बस यही है वो जिसके साथ जीवन जिया जा सकता है ?

रीना (मुस्कुराते हुए) इसका जबाब मेरे पास हाल फिलहाल तो नहीं है वसु !

एक लेखिका के तौर पर टेलीविजन के लिए लिख रही हुं तो ये जॉब 24 घंटो का है कभी भी किसी सीन के लिए मीटिंग रख ली जाती है तो पार्टनर ऐसा चाहती हुं जो मैंटल लैवल पर बहुत सपोर्टिव हो एक दूसरे के बीच प्यार समर्पण व काम को लेकर अच्छी ट्यूनिंग हो बस ऐसा जीवनसाथी चाहती हुं ।

वसुंधरा- चलते चलते आपकी कोई ऐसी रचना जो आपके दिल के बहुत करीब हो प्लीज़ कहें ।

रीना- जी वैसे तो हर लेखक की उसकी हर रचना बहुत प्रिय होती है फिर भी इस समय मुझे जो याद आरही है उसकी कुछ पंक्तियाँ कहती हूँ-

(कुछ देरी ख़ामोशी)

कितने मौसम बीते नहीं देखी बारिशों में बारिशें
जाड़े की ठिठुरन भी तो महसूस नहीं की
पतझड़ के पत्तों की तरह झड़ते रहे लम्हें
ना गर्मियों की चुभन हुई वदन पर
दरसल मौसम बीतते जाते हैं और हम सींचते रहते हैं
अपनी ही बोई हुई परेशानियाँ ।
अब एक लम्हा ठहर जाना चाहती हुँ
रुक कर महसूस करना चाहती हुँ झड़ते हुए लम्हों को
.
ज़िंदगी के सिरों खोल देना चाहती हुं , एक नये सिरे से .....

वसुंधरा- बहुत सुंदर रचना के लिए आपका आभार । आपको आपके भावी जीवनसाथी के लिए **शुभकामनाएं** व आप अपने लेखन के माध्यम से सीरियल्स के माध्यम से सभी का मनोरंजन करती रहें और सफल रहें यही **शुभकामनाएं** ।
चलो फिर मिलेंगे आपने अपने बिज़ी शैड्यूल से समय निकाला शुक्रिया रीना ।

वसुन्धरा राय

यात्रा संस्मरण

क्रांतिकारियों का काल

सेल्यूलर जेल (अंडमान)

कीर्ति प्रदीप वर्मा

ज्यों ही हमारा अंडमान जाने का कार्यक्रम तय हुआ, तो कल्पनाओं के घोड़े दौड़ने लगे काले पानी से भरा समुद्र और निर्जन टापू नजर आने लगे ।बहुत रोमांच था अंडमान को लेकर कैसा होगा ?जहां हमारे देशभक्तों को इतनी बड़ी सजा दी जाती थी ।

जाने से पंद्रह दिन पहले एक विकट समस्या आ खड़ी हुई टिकट होने के बाद वर्मा जी के पैर में माइनर फ्रैक्चर हो गया ,पर मित्रों के हौसला देने से हमें कुछ हिम्मत आई और हम निकल पड़े अंडमान की ओर। क्योंकि यह सुनहरा मौका हम खोना नहीं चाहते थे । वह दिन आ ही गया जब हम दिल्ली एयरपोर्ट से पोर्ट ब्लेयर की फ्लाइट पकड़ने निकल पडे ।शुक्र है एयरलाइंस का जो अपने यात्रियों का इतना ख्याल रखते हैं। एयरपोर्ट पर तुरंत व्हीलचेयर एवं एक अटेंडेंट आया और वर्मा जी को चेयर पर बैठा कर प्लेन के अंदर तक छोडा। कहीं जमीन पर पैर रखने की नौबत ही नहीं आई।

अंडमान जाने दो रास्ते हैं एक तो आसमान से और दूसरा पानी से पानी के जहाज से कोलकाता अथवा चेन्नई से लगभग साठ घंटे लगते हैं और हवाई मार्ग से लगभग 4 .5घंटे में पहुंचा जा सकता है ,हमारी फ्लाइट वाया कलकत्ता थी।यूं तो चेन्नई और कोलकाता से अंडमान की दूरी लगभग बराबर है कोलकाता में आधा घंटे का यात्रा विराम होता है।

अंडमान की यात्रा में अगर आप विंडो सीट पर है तो आप भाग्यशाली हैं !! क्योंकि कुदरत ने अंडमान को भरपूर आशीर्वाद दिया है! प्रकृति जहां देखो पंख फैलाए खड़ी है ।ज्यों ही अंडमान आसमान से दिखना आरंभ होता है ,सच आंखों पर विश्वास ही नहीं होता!! जो हम आज तक चित्रों या फिल्मों में

देखते आए उसे साकार रूप में देखते हैं |इतना सुंदर दृश्य स्वर्ग अनुभूति करा देता है ।स्वच्छ नीला छम आकाश और नीचे रुपहले बादल प्रकृति की उत्तम चित्रकारी नजर आते है। समुद्र का पानी स्वच्छ निर्मल सी ग्रीन कलर का दिखाई देता है ,और साथ में हरियाली ही हरियाली जी करता है बस इन नजारों को आंखों में बसा लिया जाए।

वीर सावरकर विमानतल यानी पोर्ट ब्लेयर का छोटा सा हवाई अड्डा। सोचा यादगार के तौर पर तस्वीर खींची जाए तो सुरक्षाकर्मियों ने रोक दिया, वहां चित्र खींचना सख्त मना है। विमानतल से बाहर आते ही हमारी बसें लग गई ,और हम सवार होकर चले अपने गंतव्य यानी "सिंक्लेयर वे व्यू रिसोर्ट "की ओर

शांत स्वच्छ खूबसूरत शहर पोर्ट ब्लेयर लगभग 5 लाख की आबादी, पर चारों और सुकून ही सुकून । समंदर के किनारे किनारे बना हुआ रास्ता और किनारे पर लगी रंगीन जालियां अपने साथ-साथ चलते है।

सोचा था कि अंडमान द्वीप बहुत अलग होगा ,लेकिन शहर देखकर बिल्कुल अपना सा लगा। हर जगह हिंदी नजर आई जो हमारे महानगरों में गुम सी हो गई है ।चाहे वे दुकानों के बोर्ड हो या कार्यालयों के सभी जगह हिंदी में ही लिखा होता है ।और उस समय तो हिंदी पखवाडा चल रहा था

जिसे देखकर अत्यंत प्रसन्नता हुई जहां हमारे महानगरों में अंग्रेजी का बोल बाला है वहां एक अलग टापू पर हिंदी का इतना सम्मान देखकर गर्व से सर ऊंचा हो गया। रास्ते में अंडमान हिंदी साहित्य अकादमी का ऑफिस भी नजर आया। अंडमान वासी हिंदी ही बोलते हैं वैसे तो यहां बांग्ला और बिहारी भी बोली जाती है पर मुख्य भाषा हिंदी ही है।

रिसोर्ट के सामने जैसे ही बस रुकी मन का मयूर तो पंख फैलाकर नाचने लगा।घनी हरियाली नारियल और सुपारी से लदे पेड़ और बहुत ही करीने से सजा बागीचा ।ऊंची नीची लहराती बलखाती पहाड़ियों पर लगी हरी घास और सीढी नुमा बगीचा ,तरह तरह के फूल और कलाकारी देखकर चित्त प्रसन्न हो गया ।

लॉबी में वेलकम ड्रिंक में नारियल पानी के बाद सभी को अपने अपने कमरों की चाबियां दी गई और सभी सफर की थकान मिटाने चल पड़े अपने अपने कमरों की ओर।

बड़ा ही साफ सुथरा और करीने से सजा कमरा सामने बड़े-बड़े कांच के दरवाजे, पर्दा हटा कर जब दरवाजे को खोला तो आंखों पर जैसे भरोसा ही नहीं हुआ !! सामने उछाले मारता समुंदर और बड़ी बड़ी चट्टानों से अठखेलियां करती हुई लहरें मानो कोई खेल खेल रही हों। उन्हें देखकर बचपन का पकड़म पकड़ाई खेल याद आ गया और कानों में गीत गूंजने लगा "भरा समंदर गोपी चंदर बोल मेरी मछली कितना कितना पानी "सामने ही नारियल से लदे वृक्ष और सुंदर बगीचा बस हम तो अपलक निहारते ही रहे।

नहा धोकर भोजनोपरांत सेल्यूलर जेल के लिए रवाना हुए और लगभग 20 25 मिनट में हम जेल के सामने खड़े थे, जहां दाईं तरफ छोटा सा पार्क बना हुआ है और सड़क के दायीं और वह निष्ठुर जेल जहां उन भारतीय सपूतों को यातनाएं दी जाती थी ,जो मां भारती की आजादी की लड़ाई लड़ रहे थे। सामने बड़ा सा गेट लगा था देखकर अंदाजा नहीं हो रहा था कि अंदर से यह इतना बड़ा हो सकता है।

काले पानी के नाम से कुख्यात इस कारागृह में प्रवेश के लिए(जो अब शासकीय संपत्ति है) 30 रूपये का टिकट लेना पड़ता है यहां पहचान पत्र रखना अति आवश्यक है, अनेक स्थानों पर पहचान पत्र की जांच की जाती है।

1896 में ब्रिटिश सरकार द्वारा क्रांतिकारियों को कठोर कारावास देने के लिए बनाई गई निर्जन टापू पर यह सेल्यूलर जेल, जिसका मतलब है ऐसी जेल जहां प्रत्येक कैदी को अलग कोठरियों में रखा जाए। या यों कहें हर कैदी की अलग सेल।

हमने बड़े गेट से प्रवेश किया बाए हाथ की ओर अमर जवान ज्योति जल रही थी जो शहीदों को श्रद्धांजलि स्वरुप बनाई गई है । थोड़े आगे एक और अमर जवान ज्योति जल रही थी जो एल पी जी से निरंतर जलती रहती हैं हिंदुस्तान पेट्रोलियम की ओर से सिलेंडर भेंट दिया जाता है।

दाईं ओर पीपल का वह विशाल वृक्ष जो लगभग सौ वर्ष पुराना बताया जाता है, उन यातनाओं का गवाह है जो हमारे क्रांतिकारियों को दी गई ।ऐसा लगता है बहुत दर्द भरा हुआ है इस के भीतर और यह पीड़ा से फट पड़ेगा । प्रत्येक पर्यटक से कुछ कहना चाहता है उस पीड़ा को बांटना चाहता है जैसे कह रहा हो बहुत यातनाओं के बाद आजादी मिली है तुम सब इसका मान करो।

बीच में बड़ा सा मैदान,जहां पर कुर्सियां लगी हुई है और संध्या 6:00 बजे यहां बैठकर लाइट एंड साउंड शो देखा जा सकता है एक ऐसा शो जो स्वर्गीय ओमपुरी की आवाज में है उन सब घटनाओं को बयान करता है जो उस समय घटित हुई, देख कर और सुनकर हृदय कांप उठता है!! कि इतनी यातनाएं कोई इंसान कैसे झेल सकता है?

हंसते हंसते मातृभूमि पर प्राण निछावर करने की सौगंधखाते और वंदे मातरम का जय घोष करते हुए क्रांतिकारी यहां रहे। मैदान के आगे जाते हैं तो वह कोठरियां नजर आती हैं। बीचों-बीच तीन

मंजिला टावर बना हुआ है और टावर के चारों ओर सात पंक्तियों में बनी कोठरियां ऐसी प्रतीत होता है जैसे कोई चक्र बना हो।

लाल ईंट से बनी इमारत की सीढ़ियां चढ़कर ऊपर वह कोठरियां बनी है जिनमें क्रांतिकारी रहा करते थे या यूं कहें सजा काटते थे ।

13×7.5 की कोठरी जिसमें 3 मीटर ऊपर एक छोटा सा रोशनदान और दरवाजे पर लोहे के मजबूत जालियों से बने हुए दरवाजे और दीवारों में लगे बड़ी-बड़ी कुंडिया और बड़े-बड़े ताले ।

यह सभी कोठरियां एक लाइन में बनाई गई जिससे कोई भी कैदी एक दूसरे को ना देख सके।

आखिरी की कोठरी बहुत ही महत्वपूर्ण है जिसमें देशभक्त विनायक दामोदर सावरकर रहे।

सावरकर से ब्रिटिश सरकार खौफ खाती थी ,इसलिए उन्हें एक ऐसी कोठरी में रखा गया जिसके बाहर लोहे के दो दरवाजे बनाएं ताकि वह तोड़

ना सके। कोठरी के बाहर उनके नाम की पट्टिका लगी हुई है। भीतर सावरकर की तस्वीर भी रखी हुई है कोठरी में प्रवेश करते हैं सिर श्रद्धा से झुक गया और ह्रदय फट पड़ा। दंडवत कर वहां की धूली को माथे पर लगाया।

बगल की कोठरी में ही 2 वर्ष तक उनके बड़े भाई हो रखा गया परंतु उन्हें पता नहीं चल पाया एक बार जब वे बीमार हुए तब अस्पताल में दोनों भाइयों की मुलाकात हुई।

दिनभर कोल्हू चलाने की सजा झेलते और रात्रि में दीवारों पर कविताएं करते लगभग 6000 कविताएं उन्होंने दीवारों पर लिखी जिनका प्रकाकिशन रोक दिया गया था,क्रांतिकारी भगत सिंह के सहयोग से कुछ प्रकाशन हो सका था। वह उन्हें मुंह जबानी याद थी ।

सामने एक संग्रहालय बना हुआ है जहां पर मैं कोल्हू रखा है जो क्रांतिकारियों से सजा के तौर पर चलवाया जाता था । कोल्हू में नारियल डाल दिए जाते थे और बैलों की जगह क्रांतिकारियों को बांध दिया जाता था शाम तक निश्चित मात्रा में तेल निकाल कर देना पड़ता था। कम निकलने पर अगले दिन सजा बढ़ाई जाती थी।

अधिक सजा देना हो तो साथ में डेढ़ सौ किलो का लोहा बांध दिया जाता था ,और कैदी को पीछे से

हंटर भी मारा जाता था।

नारियल के बूच से रस्सी बनाने का काम भी दिया जाता था।

बोरे से बने कपड़े जो कैदियों को पहनने के लिए दिए जाते थे जिनमें अत्यधिक गर्मी लगती थी और खुजली चलती थी ।सामान्य मनुष्य दो घंटे भी सहन नही कर सकता।कम सजा वाले कैदियों को हाथों में लोहे की हथकड़ियां उससे अधिक सजा के लिए पैरों में बेड़ियां और उससे भी अधिक सजा के लिए पैरों में जुड़ी हुई पीढ़ियां डाली जाती थी जिससे चलना अत्यधिक पीड़ादाई बहुत अच्छा और पैरों से खून निकल आता था।

कैदियों को पानी के जहाज में यहां तक तक लाया जाता था कुछ तो रास्ते में ही भूख-प्यास से दम तोड़ देते थे ,और जो यहां तक पहुंच जाते थे उन्हें उतना ही भोजन दिया जाता था जो जीने के लिए आवश्यक था। दिन में दो बार पानी दिया जाता था और लघुशंका के लिए मिट्टी का बर्तन दिया जाता था जो उसे सोख लेता था

दाई ओर फांसी घर था जहां तीन फांसी के फंदे लटक रहे थे । यहां फांसी कम ही दी गई कैदियों को तड़पा तड़पाकर मारने के लिए ही यहां लाया जाता था ,कुछ भूख से मर जाते थे और कुछ यातनाओं से।

कालापानी मतलब पानी में काल का आमंत्रण । भगत सिंह के सहयोगी महावीर सिंह ने अत्याचार के खिलाफ भूख हड़ताल की और उन्हें जबरदस्ती भोजन कराया गया। जिससे उनकी मौत हो गई उनके शव को पत्थर बांधकर समुद्र में फेंक दिया गया।

सामने पार्क में मोहन किशोर नाग दास, पंडित राम रखा ,बाबा भान सिंह, इंदू भूषण राय ,महावीर सिंह आदि की प्रतिमाएं लगी हुई हैं।

यह तीर्थ महातीर्थों का है
मत कहो इसे काला पानी तुम
सुनो वहां की धरती के कण कण की गाथा बलिदानी।
विनायक दामोदर सावरकर

मैं अंतिम नींद मातृभूमि की मिट्टी शैया पर ही सोऊँ

यही मेरी हार्दिक अभिलाषा है

बहादुर शाह जफर

ऐसे थे हमारे क्रांतिकारी जिन्हें शत शत नमन।

सेल्यूलर जेल से हैवलॉक बीच का सफर अगले अंक में

कीर्ति प्रदीप वर्मा

~अंतरा - शब्दशक्ति ~ सम्मान-2018 प्रस्तावित है

शीघ्र प्रकाश्य साझा संग्रह

1. ~अंतरा - शब्दशक्ति ~
दोहा श्रृंखला एवं मुक्तक मणि (संयुक्त साझा संग्रह)

2. ~अंतरा - शब्दशक्ति ~
गीत-नवगीत (साझा संग्रह)

3. ~अंतरा - शब्दशक्ति ~
ग़ज़ल (साझा संग्रह)

4. ~अंतरा - शब्दशक्ति ~
लघुकथाएं एवं लघु कथाएं (साझा संग्रह)

5. ~अंतरा - शब्दशक्ति ~
विचार मंथन (साझा संग्रह)

6. ~अंतरा - शब्दशक्ति ~
नई कविता भाग-1 (साझा संग्रह)

7.~अंतरा - शब्दशक्ति ~
नई कविता भाग-2 (साझा संग्रह)

संपादक मंडल
प्रीति समकित सुराना
मनोज जैन 'मधुर'
ब्रजेश शर्मा 'विफल'

~|| अंतरा-शब्दशक्ति ||~

मासिक वेब पत्रिका

www.antrashabdshakti.com